RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 जून 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 जून-01 जुलाई 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 06
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 60
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

चातुर्मास आगमन,
करें धर्म आराधन।
व्रत, उपवास और पौषध,
गुरु आज्ञा में हो रमण।।

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

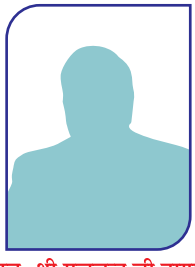

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब , टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया
कोण्डागाँव
MID No. 135417

श्री रतनलालजी साँखला
अजमेर
MID No. 153597

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत
बेंगलुरु

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा
बेंगलुरु/गंगाशहर
MID No. 116163

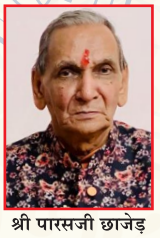
श्री पारसजी छाजेड़
धमधा
MID No. 140335

श्री पारसजी खेतपालिया
ब्यावर
MID No. 153432

स्व.श्री रिखबचंदजी सोनावत
भीनासर
MID No. 195591

श्री मनीष उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 129180

श्री मेघराजजी पुगलिया
कोलकाता
MID No. 103429

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा
खाचरोद
MID No. 105316

श्री राजेशजी कटारिया
बेंगलुरु
MID No. 129139

श्री पारसजी छल्लाणी
सोनाली
MID No. 194511

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा
देशनोक
MID No. 148228

श्री प्रसन्नजी सुराणा
रायपुर
MID No. 109641

श्री कान्तिलालजी कटारिया
रतलाम
MID No. 185412

श्रीमती आशादेवी कटारिया
रतलाम
MID No. 185424

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत
दिल्ली
MID No. 194611

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

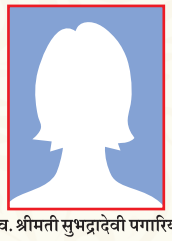
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अम्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

चतुर्थ चरण

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा-बेरला
MID No. 195647

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिलकुमारजी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंदजी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलालजी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंदजी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापुलालजी कोठारी-उदयपुर * श्री विजयकुमारजी टंच-बदनावर * श्री दिलीपजी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंदजी व्होरा- बदनावर

द्वितीय चरण * श्री तेजकुमारजी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंदजी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलालजी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्री कमलजी बैद-मुम्बई * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीताजी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमारजी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवरजी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजयकुमारजी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतनकुमारजी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभयकुमारजी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीपजी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराजजी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंदजी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलालजी देशलहरा-गुण्डरदेही

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोजकुमारजी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराजजी पारख-रायपुर * श्री झंवरलालजी कुम्मट-सिलचर * श्री सोहनलालजी रांका-ब्यावर * श्री मुन्नालालजी पँवार-कानवन * श्री प्रकाशचंदजी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मलजी खिंवसरा-ब्यावर * श्री निहालचंदजी कोठारी-ब्यावर * श्रीमती मनोरमादेवी बैद-रायपुर * श्री भागचन्दजी सिंघी-जोधपुर

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

- साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए -

कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं।
छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के स्कूल के खाते में प्रदान की जाएगी।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि महिला समिति एवं श्री संघ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

वेबसाइट–

www.sadhumargi.com/application-form/
www.sabsjmsorg/downloads/

2023-24 में छात्रवृत्ति का नया फॉर्म बनाया गया है केवल वही फॉर्म मान्य रहेगा। फॉर्म महिला समिति की वेबसाइट पर अपलोडेड है।

सम्पर्क सूत्र : 7231033008

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

|| जय गुरु नाना ||

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु राम ||

जीव दया रखने से मन में, मिट जाए भव पीर...
सबको समझे निज समान, कह गए प्रभु वीर...

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

द्वारा सामाजिक कार्य की शृंखला में प्रस्तुत है

नीलदयाणं

(जुलाई-अगस्त-सितम्बर)

सव्वेजीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिजिउं

- मांसाहारी व्यक्ति को प्रेरणा देकर मांस भक्षण छुड़वाना।
- कम से कम एक दिन के लिए कत्लखाने बंद करवाना।
- गौशाला में गाय को रोटी, चारा, गुड़ आदि खिलाना।
- मच्छरदानी का वितरण करना।
- पक्षियों को दाना-पानी देना।

क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं

- वृद्धाश्रम/अनाथालय/मूकबधिर व दिव्यांग विद्यालय एवं संस्था आदि में सेवा देना।
- शारीरिक श्रम करते हुए रिक्शाचालक/कुली/कड़ी धूप में मेहनत करते हुए मजदूर आदि को साता पहुँचाना।

आप सभी से निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा.जैन संघ)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति का केसरिया गणवेश समिति के वर्चस्व का प्रतीक है।

यह गणवेश हमारे संघ के प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक अनुष्ठान में हमारी विशेष पहचान रखता है। हमारी इस गणवेश के डिजाइन का पेटेंट रजिस्टर्ड है।

एक अनुरोध-एक निवेदन-एक नियम : इस डिजाइन के गणवेश का हमारे संघ व समाज के सामूहिक धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम में उपयोग होना अतिआवश्यक है, यह ध्यान हमें रखना है।

यह समता महिला समिति... साधुमार्गी संघ की ढाल है
चाहे तो मृगावती, सुलसा, चंदनबाल है।
गुरुभक्ति में लीन यह करती सवाल है, भगवन्! बनूँ में भी ज्ञानवान, क्रियावान,
रखकर दामन में संघ गौरव संभाल है।

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

पंजीयन संख्या : आर. एन. 7387/63

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

Visit us : www.sadhumargi.com

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष एवं प्रधान सम्पादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह-सम्पादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

प्रधान कार्यालय/ईमेल आईडी

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Scan & Pay

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

Bank	:	State Bank of India
A/c No	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. Road, Bikaner
email	:	accounts@sadhumargi.com
Mob. No.	:	7073311108

श्रमणोपासक सदस्यता

(केवल भारत में)
₹1,000/-
(15 वर्ष के लिए)

(विदेश हेतु)
₹15,000/-
(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय वार्षिक

(केवल भारत में)	₹50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	₹10/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	₹3,000/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	₹500/-
आजीवन सदस्यता	₹5,000/-

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	7231033008	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com

सूचना- किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच- दोपहर 1:00 से 1:45 बजे तक

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह 09
श्रमणोपासक हैडलाइन्स 12
गुरुचरण विहार 13
विविध समाचार 27
भक्ति रस : आओ सीखें धर्म-विवेक 34
महत्तम महोत्सव 35
विविध भेंट मार्फत 36
विनम्र श्रद्धांजलि 42
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति 43
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ 46
विहार सूची 49

सुविचार

सेवा

अप्पा सो परम अप्पा, आगम वचन सही।
जनता की सेवा भगवान की कहाती है।।
सेवा सा धरम नहीं, सेवा सा करम नहीं।
सेवा सी न पूजा व उपासना कहाती है।।
धर्म का प्रचार चाहो, सेवा करो जनता की।
गले से लगाओ उन्हें, आँसू जो बहाती है।।
असली धरम धर्मस्थानों में मिलेगा कम।
गौतम की आतमा तो, सेवा को बताती है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

बाह्य प्रभाव से मुक्त रहो

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा.

दु:ख का मुख्य और सशक्त कारण है बाह्य वातावरण से प्रभावित हो जाना। मेरे साथ किसी ने अनुकूल व्यवहार नहीं किया, उसका व्यवहार मुझे प्रतिकूल लग गया, अमुक ने मेरी बात को नकार दिया, अमुक ने भरी सभा में मेरा अपमान, इन्सल्ट कर दिया आदि अनेकविध बाह्य वातावरण से जब हम प्रभावित हो जाते हैं, हमें दु:ख का संवेदन होने लगता है। यदि यथार्थ में विचार किया जाए तो बात स्पष्ट हो जाएगी कि उक्त प्रकार के बाह्य वातावरण से मुझे जो ठेस लगी, पीड़ा हुई, दु:ख हुआ उसके पीछे मेरा ही अहंकार किसी न किसी रूप में रहा हुआ था। यदि मैंने अपने अहंकार को एक किनारे रख दिया होता तो जो दु:ख का मुझे संवेदन हुआ, वह नहीं होता। जब मैं स्वयं अहंकार को छोड़ नहीं पाता तब दूसरे से क्यों अपेक्षा की जाए कि वह ऐसा करे, वैसा करे।

दूसरों से जो करवाना चाहते हो उसका प्रयोग पहले स्वयं पर करो। स्वयं का अनुभव क्या बनता है, उसे देखो। अपनी वृत्ति को मोड़ने में कितनी कठिनाई होती है, उस स्वात्मानुभव के आधार पर जान सकोगे कि अन्य को भी कितनी कठिनाई आ सकती है। मुझे यह भी चिन्तन करना चाहिए कि जैसे मैं अन्य से कुछ अपेक्षाएँ रखता हूँ तो अन्य भी मेरे से कुछ अपेक्षाएँ रखते होंगे। मैं उनकी अपेक्षाओं पर कितना खरा उतर रहा हूँ। यदि मैं उनकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा हूँ तो पहले मुझे भी वैसी तैयारी करनी चाहिए। मैं यदि दूसरों की अपेक्षाओं पर खरा उतर गया हूँ तो अधिकांश संभावना है कि मुझे अन्य से शिकायत होगी ही नहीं और न ही मुझे दु:ख ही होगा।

दु:ख न हो इसका सुन्दर उपाय है कि स्वयं को बाहर के वातावरण से मुक्त रखो। उसका प्रभाव अपने पर होने मत दो। यदि कोई कुछ भी कर रहा है तो उसके पीछे भी कोई कारण होगा। कर्त्तव्य दृष्टि से यदि किसी को निर्देश देना हो तो निर्देश दिया जा सकता है किन्तु प्रेशर नहीं। प्रेशर से प्रेशर पनपता है। मैंने यदि किसी पर प्रेशर/दबाव दिया तो उस दबाव का प्रतिबिम्ब, उस प्रेशर की प्रतिक्रिया मुझ पर अपना प्रभाव डाले बिना शायद न रहे। अत: उत्तम यही है कि बाह्य प्रभावों से स्वयं को मुक्त रखा जाए।

फाल्गुन कृष्ण 11, शनिवार, दिनांक 05.03.2016

साभार– आरोह

* * * * *

रुक्मिणी विवाह

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री जवाहरलालजी म.सा.

आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा. के प्रवचन 'श्री जवाहर किरणावली' के रूप में संकलित हैं। श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह) में रुक्मिणी के विवाह प्रसंग से लेकर उनके अणगार धर्म को अंगीकार कर समस्त कर्मों को क्षय करके सिद्ध अवस्था को प्राप्त करने तक का बड़ा ही सरल व सुन्दर वर्णन संकलित है। यह वर्णन आपके समक्ष धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

29-30 मई 2023 अंक से आगे.....

भीम ने सोचा कि यह मूर्खतावश कृष्ण विरोधी लोगों की बातों से बहुत अधिक प्रभावित हो चुका है। इस मूर्ख और अविनीत पुत्र को समझाना बहुत कठिन है। नीति में भी कहा है-

प्रसह्य अणिमुद्धेरन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात्।
समुद्रमपि संतरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम्।।
भुजंगमपि कोपित शिरसि पुष्पचद्धारये।
न्नतु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्।।

अर्थात् यदि मनुष्य चाहे तो मगर की दाढ़ों से मणि निकालने का उद्यम भले करे, उथल-पुथल होते हुए समुद्र को तैरकर पार करने की चेष्टा भले करे, क्रोध से भरे हुए साँप को पुष्पहार की तरह सिर पर धारण करने का साहस भले करे, परन्तु हठ पर चढ़े हुए मूर्ख मनुष्य के चित्त को असत् मार्ग से सत् मार्ग पर लाने की हिम्मत कदापि न करे।

इसके अनुसार इसे समझाने की चेष्टा निरर्थक ही होगी। फिर भी असफलता के भय से प्रयत्नहीन बन बैठना अनुचित है। ऐसा करना तो नीचों का काम है। उत्तम पुरुष का कर्त्तव्य कार्य करते रहना है, फिर फल हो या न हो। कार्य करना अपने अधिकार की बात है, फल अपने अधिकार में नहीं है।

भीम बोले- बेटा रुक्म! तुम्हें किसी ने कृष्ण की ऐसी ही बातें सुनाई हैं, जिनमें कृष्ण की निन्दा ही निन्दा हैं। कृष्ण की उन बातों से तुम सर्वथा अपरिचित जान पड़ते हो, जिनके कारण कृष्ण की प्रशंसा हो रही है। संसार के प्रत्येक मनुष्य में सद्गुण और दुर्गुण दोनों ही रहते हैं। ऐसा कोई ही मनुष्य होगा जिसमें केवल गुण ही गुण या दुर्गुण ही दुर्गुण हो। हाँ, यह अवश्य है कि किसी आदमी में कोई ऐसा बड़ा सद्गुण होता है, जिससे उसके समस्त दुर्गुण छिप जाते हैं तथा वह प्रशंसनीय माना जाता है और किसी आदमी में कोई ऐसा बड़ा दुर्गुण होता है, जिससे उसके सद्गुणों पर पर्दा पड़ जाता है और वह निन्द्य माना जाता है। यह नियम सारे संसार के लिए है। मनुष्य की गुरुता, लघुता भी इसके अधीन है। मैं यह नहीं कहता कि कृष्ण इस नियम से बचे हुए हैं यानी उनमें सर्वथा गुण ही हैं, परन्तु उनके गुणों के आधिक्य ने उनके समस्त दूषणों को ढक दिया है और आज उनके समान प्रशंसनीय

दूसरा कोई नहीं माना जाता। श्रेष्ठजनों में उनका आदर है, प्रभाव है और वे कुलीन माने जाते हैं। उनके विरुद्ध तुमने जो बातें कही हैं, ये ठीक नहीं हैं। तुम्हें किसी ने भ्रम में डाल दिया है। उनके साथ रुक्मिणी का विवाह करना, न करना दूसरी बात है, परन्तु किसी प्रतिष्ठित पुरुष के विषय में बुरे विचार रखना ठीक नहीं। मेरा विश्वास तो यही है कि कृष्ण के साथ रुक्मिणी का विवाह करने से अपने गौरव की वृद्धि ही होगी।

रुक्म- आप मुझे भ्रम में समझ रहे हैं, लेकिन वास्तव में भ्रम आपको है। श्रेष्ठ समाज में कृष्ण का कदापि आदर नहीं है, किन्तु वह घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। उसके साथ रुक्मिणी का विवाह करने से श्रेष्ठ समाज के सामने हम भी घृणास्पद ही माने जाएँगे। हमारा गौरव कदापि नहीं बढ़ सकता। आप कुछ भी कहिए, कृष्ण के साथ रुक्मिणी के विवाह से मैं कदापि सहमत नहीं हो सकता। न अपने रहते अपनी बहिन का ऐसे अयोग्य के साथ विवाह होने ही दे सकता हूँ।

मंत्री ने देखा कि इन पिता-पुत्र का मतभेद बढ़ता जा रहा है। उसने विचार किया कि यदि इस मतभेद को शान्त नहीं किया और बढ़ने दिया गया तो यह भीषण गृह-कलह के रूप में परिणत हो जाएगा। इसलिए इस मतभेद को इसी समय शान्त कर देना उचित है। यद्यपि उद्दण्डता रुक्म की ही है, परन्तु इस समय उसे कुछ कहना अग्नि में घी डालने के समान होगा। मूर्ख और बुद्धिमान के वाक्युद्ध में बुद्धिमान को ही शान्त रहने के लिए कहा जा सकता है। मूर्ख को शान्त रहने के लिए कहना तो उसकी मूर्खता के प्रदर्शन का क्षेत्र बढ़ाना है। इस प्रकार विचार कर मंत्री ने भीम से कहा- ''महाराज! यह बात दूसरी है कि आपके विचार से रुक्मकुमार असहमत हैं, परन्तु आप अपने विचार प्रकट कर चुके हैं। इसलिए अब आपको वाद-विवाद में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा करने से कार्य तो अपूर्ण रह ही जाएगा, साथ ही गृह-कलह भी सम्भव है। इसलिए अब आप शान्त हो जाइए। आपने रुक्मिणी के योग्य कृष्ण को वर बताया, परन्तु रुक्मकुमार कृष्ण को रुक्मिणी के योग्य नहीं मानते। इसलिए अब इन्हीं से पूछना चाहिए कि इनकी दृष्टि से रुक्मिणी के योग्य वर कौन है? उद्देश्य तो रुक्मिणी के वर का विचार करना है, किसी की गुरुता या लघुता के वाद-विवाद में पड़ना नहीं है।''

मंत्री की बात सुनकर **भीम** ने कहा- ''अच्छी बात है। देखें, रुक्म की दृष्टि में रुक्मिणी के योग्य वर कौन है?''

मंत्री ने रुक्म से कहा- ''कुमार! यदि महाराज द्वारा प्रस्तावित श्रीकृष्ण रुक्मिणी के योग्य वर नहीं हैं, तो अब आप ही बताइए कि रुक्मिणी के योग्य वर कौन है?''

रुक्म- हाँ, यह अवश्य बताऊँगा। मैंने पहले से ही रुक्मिणी के योग्य वर का विचार कर लिया है। चन्देरी के राजा शिशुपाल रुक्मिणी के पति बनने के सर्वथा योग्य हैं। वे कुलीन भी हैं। उनके कुल जैसा निष्कलंक कुल ढूँढ़ने पर भी मिलना कठिन है। उनके बल-वैभव का तो कहना ही क्या है? महाराज जरासन्ध भी उनकी धाक मानते हैं और उन्हें सम्मान सहित अपने पास बिठाते हैं। 99 राजा उनके आज्ञाकारी हैं। रूप, गुण में भी वे कम नहीं हैं। वे युवक भी हैं। किसी भी दृष्टि से विचार करें, रुक्मिणी के योग्य वर शिशुपाल ही हैं और शिशुपाल के साथ विवाह सम्बन्ध करने पर अपनी भी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

रुक्म की बात का उसकी माता शिखावती ने भी समर्थन किया। वह भी कहने लगी कि रुक्मकुमार का कथन ठीक है। शिशुपाल रुक्मिणी के अनुरूप वर हैं। मैंने जब से उनकी प्रशंसा सुनी है, तभी से मेरी भावना यही है कि रुक्मिणी का विवाह चन्देरीराज शिशुपाल के साथ हो। रानी के इस समर्थन से मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह विचारने लगा कि महारानी इस प्रकार अपने

पुत्र की बात का समर्थन कैसे कर रही है? इन्होंने शिशुपाल की प्रशंसा सुनी होगी तो रुक्म के द्वारा ही सुनी होगी और रुक्म शिशुपाल का मित्र है तथा अनुभवहीन है। महारानी ने इसकी बात पर विश्वास करके महाराज की बात पर अविश्वास कैसे किया? इनके लिए ऐसा करना कदापि उचित नहीं था। लेकिन इस समय क्रोधमूर्ति मूर्ख रुक्म के सामने औचित्य का विचार लाना, गृह-कलह का सूत्रपात करना है। राजा भीम भी सोच रहे थे कि रानी ने अपने वृद्ध पति की अपेक्षा युवक पुत्र का पक्ष समर्थन करने में अपना हित देखा है। इसने अपना हित देखकर रुक्म की बात का समर्थन तो कर दिया है, परन्तु इसने किया तो अन्याय ही है। पुत्र की बात पर विश्वास करने और मेरी बात पर अविश्वास करने का रानी के पास कोई कारण नहीं था। रानी ने मेरी बात पर अविश्वास करने का कारण नहीं होते हुए भी हितलोलुपता से ही पतिव्रत धर्म को ठुकराया है।

राजा भीम और मंत्री तो इस प्रकार विचार कर रहे थे, परन्तु रुक्म माता द्वारा अपनी बात पुष्ट हो जाने से प्रसन्न हो रहा था। रुक्म ने अपने को विजयी माना। वह बार-बार यही कहने लगा कि देखो, मेरी बात से माता भी सहमत है। मैंने जो कुछ कहा है, उसकी वास्तविकता ही ऐसी है। इसलिए आप सबको भी मेरी ही बात से सहमत होना चाहिए।

मंत्री ने सोचा कि महाराज के प्रस्ताव के विरोध में पहले तो अकेला रुक्म ही था, लेकिन अब तो उसकी माता भी उसका साथ दे रही है। अब यदि महाराज ने अपने पक्ष को खींचा तो भयंकर गृह-कलह मच जाएगी, जिसमें एक ओर माता सहित रुक्मकुमार होगा तो दूसरी ओर वृद्ध महाराज होंगे। इस गृह-कलह का परिणाम अच्छा नहीं निकल सकता। इस प्रकार विचार कर उसने राजा भीम से कहा कि महाराज! किसी मतभेद की बात को विशाल रूप देने से आपकी ही हानि है। बुद्धिमान वही है, जो ऐसे समय में अपनी बात को ढील दे दे। जब महारानी सहित रुक्मकुमार कृष्ण के साथ रुक्मिणी के विवाह का विरोध कर रहे हैं और शिशुपाल के साथ विवाह करना चाहते हैं, तब आपकी इच्छानुसार विवाह होने पर भयंकर गृह-कलह की सम्भावना है। इसलिए यही अच्छा है कि राजकुमारी का विवाह राजकुमार और महारानी की इच्छानुसार ही होने दिया जाए।

राजा भीम ने भी सोचा कि उद्दण्ड रुक्म के सम्मुख वैसे भी मेरी इच्छानुसार कार्य होना कठिन था और अब तो उसे अपनी माता का भी बल प्राप्त है। यदि मैंने इसकी बात का खण्डन और अपनी बात पुष्ट करने की चेष्टा की तो मंत्री के कथनानुसार अवश्य ही विरोध बढ़ जाएगा और ऐसा होने पर अपनी हानि भी होगी तथा दूसरे लोग भी हँसेंगे। इस प्रकार विचार कर राजा भीम ने कहा कि यद्यपि मेरी इच्छा तो कृष्ण के साथ रुक्मिणी का विवाह करने की है, मिथ्याभिमानी शिशुपाल के साथ मैं रुक्मिणी का विवाह करना कदापि उचित नहीं समझता, फिर भी मैं इनके कार्य का विरोध नहीं करूँगा, किन्तु इस विषय में मैं तटस्थ रहूँगा। रुक्म और उसकी माता को जैसा उचित जान पड़े करें, परन्तु मैं उनके कार्य से सहमत न होऊँगा। हाँ, इतना अवश्य कहूँगा कि प्रत्येक कार्य के परिणाम को पहले विचार लेना अच्छा है, जिसमें फिर पश्चात्ताप नहीं करना पड़े।

यह कहकर अनिच्छापूर्वक रुक्मिणी के विवाह का भार रुक्म और उसकी माता पर छोड़कर राजा भीम उस सभा से उठ गये। दूसरे लोग भी अपने-अपने स्थान को गये। रुक्म भी प्रसन्न होता हुआ अपने स्थान को गया। उसे अपने वृद्ध पिता के असन्तोष का कोई विचार नहीं था, किन्तु वह अपने को विजयी मानकर प्रसन्न हो रहा था।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी विवाह)

-क्रमशः

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हैडलाइन्स

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु इंजी. लक्कीजी सुराणा, बेंगलुरु एवं मुमुक्षु नुपुरजी भूरा, सूरत की भव्य जैन भागवती दीक्षाएँ बड़ीसादड़ी में सम्पन्न।
- आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के दृढ़ संयम का अद्भुत अतिशय प्रत्यक्ष देखने को मिला, जब मुमुक्षु नुपुरजी भूरा पूर्व में घोषित मुमुक्षु लक्कीजी सुराणा के दीक्षा अवसर पर साधुवेश में दीक्षा हेतु उपस्थित हुई। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री लोकोत्तरश्रीजी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री निर्ग्रंथश्रीजी म.सा. घोषित।
- साधुमार्गी इतिहास में प्रथम बार बड़ीसादड़ी रेलवे स्टेशन पर सम्पन्न हुई दोनों दीक्षाएँ।
- महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत बड़ीसादड़ी में व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन हुआ। आचार्य श्री रामेश का व्यसनमुक्ति संदेश जन-जन तक पहुँचाया।
- बड़ीसादड़ी में 300 से अधिक लोगों ने एक साथ दयाव्रत कर कीर्तिमान स्थापित किया।
- नवदीक्षिता साध्वी श्री निरामयश्रीजी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री लोकोत्तरश्रीजी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री निर्ग्रंथश्रीजी म.सा. का छेदोपस्थानीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) धर्मोल्लासपूर्वक बड़ीसादड़ी में सम्पन्न।
- शिंदखेड़ा में नवनिर्मित समता भवन का भव्य लोकार्पण 4 जून 2023 को हुआ।
- केन्द्रीय पदाधिकारियों का मालवा अंचल का एक दिवसीय प्रवास एवं बीकानेर-मारवाड़ अंचल पदाधिकारियों का दो दिवसीय क्षेत्रीय प्रवास हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न।
- नवाचार के अन्तर्गत मुमुक्षु बहिन इंजी. लक्कीजी सुराणा के करकमलों से नवीन साहित्य 'झीलों की लोरी' का विमोचन सम्पन्न।
- दीक्षा साक्षी बनने एवं आचार्य भगवन् के दर्शन-वंदन हेतु भाजपा के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री सी.पी. जोशी, विधायक श्री ललितजी ओस्तवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गौतमचंदजी दक, बड़ीसादड़ी नगरपालिका के चेयरमैन श्री विनोदजी कंठालिया, पूर्व चेयरमैन सैफुदीनजी बोहरा, रेलवे अधिकारी मीणाजी, राजस्थान सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री श्रीचंदजी कृपलानी, पूर्व विधायक श्री अशोकजी नवलखा उपस्थित हुए। विभिन्न विषयों पर चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित कर्म तत्त्वज्ञ (श्रावकों के लिए) भाग-सी, श्रुत भ्रमण (अन्तगडदसाओ सूत्र पर आधारित) ओपन बुक परीक्षा, आरोह, प्रणव एवं नीरव का रव पुस्तकों पर गतवर्ष आयोजित ओपन बुक परीक्षा के परिणाम जारी।

महापुरुषों के सुनहरे चरण अनवरत बढ़ रहे हैं।
मेवाड़ के बाद अब मालवा की धरा को पावन कर रहे हैं।।

श्रद्धा, भक्ति, समर्पणा से जनसैलाब सराबोर; बड़ीसादड़ी में चातुर्मास जैसा ठाठ; सुनहरे कदम बढ़ रहे नीमच की ओर

बड़ीसादड़ी, करजू, माटोला, देवली, गणेशपुरा, छोटीसादड़ी।

हे गुरुवर वाणी तुम्हारी मंगलकारी, दर्शन तुम्हारे प्रियकारी।
शिक्षा तुम्हारी हितकारी, हम सब के तुम हो उपकारी।।

युगनिर्माता, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में बड़ीसादड़ी में एक की जगह दो दीक्षाएँ सम्पन्न हुई। पूर्व में घोषित मुमुक्षु इंजी. लक्कीजी सुराणा की दीक्षा के अवसर पर वीर बाला मुमुक्षु नुपुरजी भूरा भी साधुवेश में दीक्षा ग्रहण करने हेतु उपस्थित हुई। द्वय महापुरुषों के अद्भुत अतिशय को देखकर जनता आश्चर्यचकित हो नतमस्तक हो गयी।

नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा बड़ीसादड़ी में धर्मोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुई। स्वर्णनगरी छोटीसादड़ी में महापुरुषों के चरण पड़ते ही अध्यात्म की स्वर्णिम आभा छा गयी। द्वय गुरु-भगवंतों का केसुंदा होते हुए **'साधना महोत्सव'** चातुर्मासार्थ नीमच पधारना संभावित है। मालवा क्षेत्र का जन-जन पलक पावड़े बिछाये हुए है।

हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती।
-आचार्य श्री रामेश

सुख नितांत आत्मभावों में है।
-उपाध्याय प्रवर

संयम मार्ग कायरों का नहीं, वीरों का मार्ग। जिन्हें होती है मुक्ति की चाह, वे ही चलते हैं संयम की राह।।

01 जून 2023, बड़ीसादड़ी। युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्य आत्माएँ श्रीचरणों में समर्पित हो रही हैं। इसी कड़ी में भौतिकता की चकाचौंध को छोड़कर दो वीर बालाओं

28 वर्षीय मुमुक्षु बहिन **इंजी. लक्कीजी सुराणा** सुपुत्री श्रीमती मधुजी-राजेन्द्रजी सुराणा, बेंगलुरु/गंगाशहर एवं अतिशय युक्त एक अन्य दीक्षा 27 वर्षीय मुमुक्षु बहिन **कु. नुपुरजी भूरा** सुपुत्री श्रीमती चंदादेवी-आनंदमलजी भूरा, सूरत/देशनोक ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्व-पर कल्याण की साधना के साथ अध्यात्म पथ पर समर्पित कर सबके लिए आदर्श बनकर छोटी उम्र में कठोर संयम साधना से अपनी जीवन बगिया को महकाने में लग गयीं। रेलवे स्टेशन में पहली बार हुए इस विराट दीक्षा आयोजन में उभय गुरु-भगवंतों एवं संत-महासतियों के विराजने से समवसरण-सा अद्भुत दृश्य देखने को मिला।

विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म मंगल है। ऐसे धर्म में जिसका मन सदा लगा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म क्यों करना? किसलिए करना? धर्म से क्या लाभ है? ऐसे बहुत सारे प्रश्न समय-समय पर खड़े होते हैं। धर्म का काम है सुख पहुँचाना। धर्म का परिणाम हमारे जीवन को प्रसन्नता देना है। धर्म से निश्चित रूप से मन प्रसन्न रहता है। हमें अहिंसा, संयम और तप के प्रति समर्पित होना होगा। अनादिकालीन वासनाएँ, वृत्तियाँ, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि से उपरत होना आसान नहीं है। जहाँ धर्म रूपी बीज का अंकुरण हो गया, वहाँ इन पर भी जय प्राप्त की जा सकती है। साधु जीवन की परिपालना दुरूह है। मान, बड़ाई, ईर्ष्या को जीतना कठिन है। मेरा नाम है, मेरा वर्चस्व है, मेरी तेजस्विता है, किन्तु वह थोड़े काल के लिए ही होती है। उससे लम्बा परिणाम नहीं होता। जीवन में सुख-शांति के लिए धर्म के निकट आना होगा। तन जावे तो जावे, पर मेरा सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। आज लक्की सुराणा एवं नुपुर भूरा धर्म के पथ पर अग्रसर हो रही हैं। दोनों बहिनों की भावना रही है कि वे गुप्त दीक्षा लेंगी। संयम का मार्ग वीरों का मार्ग है, कायरों का नहीं। मोह को जीतने वाले विरले ही होते हैं। ये दोनों बहिनें सिंह के मार्ग पर आगे बढ़कर सबके लिए प्रेरणा का प्रसंग बन रही हैं।**''

आचार्य भगवन् ने 12:10 बजे दीक्षा विधि प्रारम्भ कर मुमुक्षु बहिनों को दीक्षा की तैयारी के बारे में पूछा कि आप लोगों ने अच्छी तरह से सोच लिया है ना? तो दोनों बहिनों ने **'तहत्ति भगवन्'** कहकर स्वीकृति दी। इस संबंध में वीर सुराणा परिवार एवं वीर भूरा परिवार पूर्व में ही लिखित अनुमति प्रदान कर चुके हैं। फिर भी आज के प्रसंग पर दोनों परिवारों ने पुनः अपने दोनों हाथ खड़े कर दीक्षा के श्रेष्ठ मार्ग हेतु स्वीकृति प्रदान की। आचार्य भगवन् ने जब उपस्थित जनसमूह से दीक्षा हेतु अनुमति चाही तो श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ सहित श्री साधुमार्गी जैन संघ, बड़ीसादड़ी के पदाधिकारियों एवं उपस्थित प्रत्येक जन ने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा अनुमोदना का लाभ लिया। बड़ीसादड़ी की एक खासियत है कि यहाँ सभी जाति के लोग प्रेम से रहते हैं। सभी का एक-दूसरे से अच्छा संबंध है।

आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''**बोहरा मुस्लिम समाज आज सभा में उपस्थित है। हमारा धर्म यही सिखाता है कि सबके साथ हमारा आत्मीय भाव बढ़े। संयम की साधना लोकोत्तर की साधना है।**''

दोपहर 12:20 बजे आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से दोनों मुमुक्षु बहिनों को सम्पूर्ण सावद्य पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण के

रूप में नवदीक्षिता **महासती श्री लोकोत्तरश्रीजी म.सा.** एवं नवदीक्षिता **महासती श्री निर्ग्रंथश्रीजी म.सा.** के नामों की घोषणा के साथ ही सम्पूर्ण सभा केसरिया-केसरिया गीतों एवं जय-जयकारों से गूँज उठी। केशलुंचन का शुभ कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा. के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''गुरु के चरण आत्मकल्याण का मार्ग हैं। यह संयम का मार्ग सेवक बनने का मार्ग है। राजा बनने का नहीं, अपितु अनुचर बनने का मार्ग है। अपने मन में, अंतर की गहराई में एक ही बात सदा-सदा बनाए रखना कि मान की इच्छा, सम्मान की इच्छा नहीं रहनी चाहिए। हम सेवक हैं और हमें सेवक ही रहना है। इस अंतर भाव को गहरे में बैठाना है।''**

श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बनें। क्या पता फिर ये मौका मिले, ना मिले। मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ है। जिनवाणी पर श्रद्धा होना दुर्लभ है और संयम में पराक्रम होना तो अति दुर्लभ है। तीर्थंकर देवों के प्रतिनिधि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर इस संसाररूपी कीचड़ से निकालने के लिए भागीरथी पुरुषार्थ कर रहे हैं।

साध्वी श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि दीक्षा वही ले सकता है जो उसका सिंह के समान पालन करे। महान सद्गुरु मिलने के बाद भी अगर जीवन में परिवर्तन नहीं आया तो वह जीवन धिक्कार है। दीक्षा लेनी है तो आत्मज्योति को प्रकट करना होगा।

साध्वी श्री कर्णिकाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि यह संसार दु:खों से भरा हुआ है। जहाँ राग-द्वेष हैं, वहाँ आत्मा का कल्याण होने वाला नहीं है। लम्बे समय का सुख पाना है तो थोड़े समय का दु:ख हमें उठाना ही होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. ने ***''देते हैं गुरुवर को बधाइयाँ''*** सुन्दर भावभरा गीत प्रस्तुत किया।

श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्री नीरजमुनिजी म.सा., श्री हेमंतमुनिजी म.सा., श्री राजनमुनिजी म.सा., श्री हर्षितमुनिजी म.सा., श्री गगनमुनिजी म.सा., श्री धीरजमुनिजी म.सा. ने ***''अवसर आज अनूठो आयो, परमेष्ठी पद पायो''*** भजन फरमाया।

वीर बड़े पिता जसकरणजी सुराणा, बेंगलुरु ने कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा से हमारी लाडली जिनशासन में समर्पित हो रही है। गुरु-भगवंतों की कृपा सदा इस पर बनी रहे और यह अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करे। **आरुग्गबोहिलाभं** की बहिनों ने प्रेरणादायी संयम गीत प्रस्तुत किया।

स्थानीय संघ अध्यक्ष एवं महेश नाहटा ने मुमुक्षु बहिनों का परिचय देते हुए आज के प्रसंग को आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के अद्भुत अतिशय का प्रतिफल बताया।

सभा में संघ के राष्ट्रीय महामंत्री व अन्य पदाधिकारीगणों सहित पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, भाजपा के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री सी.पी. जोशी, विधायक ललितजी ओस्तवाल, भाजपा जिला अध्यक्ष गौतमचंदजी

दक, नगरपालिका चेयरमैन, रेलवे अधिकारी मीणाजी एवं मेवाड़ व देश के अनेक भागों से पधारे हजारों गुरुभक्तों ने उपस्थित होकर दीक्षा अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। यह दीक्षा महोत्सव बड़ीसादड़ी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

साधु के लिए बनाया गया आहार जहर के समान

02 जून, समता भवन, बड़ीसादड़ी। प्रात: मंगलमय बेला में प्रभुभक्ति रूपी प्रार्थना पश्चात् आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ श्रवण कराया। धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**जिसका मन सदैव धर्म में लगा रहता है उसे मानव तो क्या देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म की आराधना के लिए शरीर एक माध्यम है। शरीर को टिकाए रखने के लिए खाना जरूरी है। ''जैसा खावे अन्न वैसा होने मन, जैसा पीए पानी वैसी होवे वाणी''! साधु के लिए बनाया गया आहार जहर के समान है। यह आधाकर्मी आहार साधु के ग्रहण करने योग्य नहीं है। आहार शुद्ध होगा तो वाणी भी शुद्ध होगी। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका को तीर्थ माना गया है। साधु-साध्वी के संयमी जीवन की रक्षा करने का दायित्व श्रावक-श्राविका का है। उनकी साधना अच्छी हो यह प्रयास होना चाहिए। साधु जीवन खाने-पीने के लिए नहीं अपितु साधना के लिए है। अनादिकाल से खाते-खाते जीवन व्यतीत होता जा रहा है। खाने में आसक्ति ना हो। शुद्ध संयम का पालन करें। हम भगवान महावीर से विश्वासघात नहीं करेंगे।**''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी हमें तारने वाली है। हमें भी अपनी धर्मक्रियाएँ प्रतिदिन करनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु की कथनी और करनी में समानता है। वे साधना पुरुष होने के साथ-साथ हमारे माता-पिता, बंधु-सखा सब कुछ हैं। इनकी आज्ञा की आराधना करें। साध्वी मण्डल ने ''***आज गुरु का स्वागत है***'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

पैसों से कभी तृप्ति मिलने वाली नहीं

03 जून। भगवान महावीर को समर्पित प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्यदेव के श्रीमुख से मांगलिक श्रवण पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म या धन दोनों में से किसके प्रति हमारा लगाव व रुझान ज्यादा है? श्रावक का लक्ष्य परिग्रह एवं संग्रह वृत्ति बढ़ाने का नहीं है। पैसों से कभी तृप्ति मिलने वाली नहीं है। हमारी इच्छाएँ जितनी बढ़ेंगी, उनसे शांति और समाधि मिलने वाली नहीं है।**

धर्म के प्रति अनुराग होता है और धन के प्रति आकर्षण। दिखावटी धर्म से सुगंध आ नहीं सकती। धर्म की डाली पर हमेशा शांति के पुष्प खिलते हैं। मन को जब शांत रखते हैं, तब धर्म प्रतिष्ठा पाता है। कोई कुल्हाड़ी से काटे या कोई फूल बिछावे, हमें समभाव से रहना चाहिए।''

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संयमी जीवन सुखी बनाता है और असंयमी जीवन दु:ख पहुँचाता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने *''गुरु तेरे साथ है, फिर डरने की क्या बात है''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

युवा शिविर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपने प्रभावी मार्गदर्शन में फरमाया कि **''जीवन विकास के लिए तीन रास्ते हैं- 1. ज्ञान का रास्ता, 2. सेवा-भक्ति का रास्ता एवं 3. आचरण भक्ति का रास्ता। इन तीनों में से एक रास्ता अपनाकर अपना जीवन सार्थक बनाएँ।''**

दोपहर में उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। संघ मंत्री ने महापुरुषों के सत्संग का लाभ उठाने की अपील की। एक-एक व्यक्ति को व्यसनमुक्त बनाने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। महिला शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने धोवन पानी, सुखी जिन्दगानी एवं सूझता-असूझता की महत्त्वपूर्ण सारगर्भित जानकारी दी।

महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम पिछड़ी बस्ती इन्दिरा कॉलोनी, गाड़ी लोहार में किया गया, जिसमें महेश नाहटा सहित समता युवा संघ, महिला मण्डल के अनेक सदस्यों ने ग्रामीणों को व्यसन से होने वाले नुकसानों से अवगत कराया। कई ग्रामीण भाई-बहिनों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिये।

समभाव से कषाय ठण्डे हो जाते हैं

04 जून। रविवारीय समता शाखा में प्रात: समता आराधना करवायी गयी। इसमें बाल, युवा, वृद्ध सभी की उपस्थिति देखते ही बनती थी। आचार्यदेव ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। समता प्रवचन हॉल में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जब हमारा भाव तीव्र होता है तो वो कषायों को ठण्डा कर देता है। मन व विचारों को साफ-सुथरा करते रहेंगे तो उसमें कषाय नहीं जमेंगे। मन की सफाई आलोचना, निंदा व गर्हा इन तीनों से होती है। छोटी-छोटी बातों पर हम क्रोध कर लेते हैं। यदि मैं किसी के दुर्गुणों को देख रहा हूँ, किसी की कमियों को ढूँढ़ रहा हूँ तो मेरे भीतर अहंकार मौजूद है। अहंकार का भोजन दूसरों के दोष देखना है। जब तक दूसरों के दोष देखेंगे तब तक अहंकार शांत नहीं होगा। क्रोध, मान, माया, लोभ को जब तक हम समीक्षण करके निकालने का प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक कचरा पड़ा रहेगा। हमें अपनी आत्मशुद्धि प्रतिदिन करनी चाहिए। हमारे भीतर आत्मशुद्धि का पर्व रोज होना चाहिए। निष्काम भाव से सेवा करने वाले को नाम की ख्वाहिश नहीं होती है। मन को कोई तमन्ना नहीं होती है कि कभी मेरी दो शब्दों से प्रशंसा की जाएगी। यदि हम सेवा के साथ यह भावना रखें कि मेरा नाम, मेरी प्रशंसा हो या मेरे लिए किसी के सामने दो शब्द कहे जाएँगे तो सेवा गुण का जो परिणाम हमारी आत्मा को मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाएगा।**''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सांसारिक कार्यों में सच्चा सुख नहीं है। धर्म आराधना में सच्चा सुख है। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ अध्यक्षजी ने आराध्यदेव के पावन सान्निध्य को बड़ीसादड़ी संघ का पुण्योदय बताया। नवदीक्षिता महासतीवर्याओं की बड़ी दीक्षा की भावभरी विनती प्रस्तुत की गयी।

युवा शिविर में श्री राजनमुनिजी म.सा. ने साधुमार्गी संकल्प सूत्र की सुन्दर समझाइश दी। रामधुन के सैकड़ों ग्रामीण भाई-बहिनों को श्री गगनमुनिजी म.सा. ने प्रभुभक्ति, स्वाध्याय एवं व्यसनमुक्ति की प्रेरणा दी। व्यसनमुक्ति के शुभ संकल्प हुए। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शन कर जनता धन्य-धन्य हो गयी। महिला शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने धर्मतत्त्व का बोध कराया।

व्यसनमुक्ति रैली का भव्य आयोजन

महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत व्यसनमुक्ति सप्ताह में व्यसनमुक्ति रैली का शानदार आयोजन श्री साधुमार्गी जैन संघ, बड़ीसादड़ी द्वारा किया गया। नगर के प्रमुख मार्गों पर भगवान महावीर का दिव्य संदेश **'जीओ और जीने दो', 'राम गुरु का संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'** एवं **'मानवता के दो आधार, सदाचार और शाकाहार'** आदि नारे गूँज रहे थे। सत्साहित्य वितरण के साथ जन-जन को व्यसनमुक्ति की प्रेरणा दी गयी।

संघ, महिला समिति एवं युवा संघ के अध्यक्ष, मंत्री सहित महेश नाहटा ने राम गुरु के व्यसनमुक्ति संदेश को जन-जन तक पहुँचाने की अपील की।

05 जून। प्रात:कालीन धार्मिक प्रार्थना के पश्चात् उपस्थित गुरुभक्तों को आचार्यदेव ने अद्भुत कृपा कर मंगलपाठ श्रवण कराया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए जगत् उद्धारक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''***हम धर्म की आराधना कर रहे हैं, पर हमें धर्म तत्त्व की पहचान है या नहीं? धर्म की पहचान अपनी प्रज्ञा से करें, फिर उसका आचरण करने में बहुत आसानी हो जाएगी। धर्म आत्मा का गुण है। आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान करना, आत्मा के चैतन्य धर्म को जागृत करना धर्म है। कई बार हमारा मन भटक जाता है। मन भटकने का कारण स्वार्थ है। पाँचों पदों की जो आराधना करेगा, वह सारे पापों का नाश कर सकता है। पाँचों पद जड़ नहीं चेतन हैं। स्थानकवासी समाज जड़ मान्यता का विरोधी रहा है। जड़ बुद्धि हमें चैतन्य की आराधना कराने वाली नहीं बना पाएगी। देवी-देवता के फोटो, मूर्तियाँ या गुरुदेव के फोटो की आराधना, उपासना नहीं करते, क्योंकि उसमें वह चैतन्य गुण नहीं है। हमारे भीतर परमात्मा बनने की क्षमता है, किंतु जब तक हम जड़ में आसक्त बने हुए हैं व पुद्गलों के बीच फँसे हुए हैं, तब तक हमारी बुद्धि जड़ बुद्धि बनी रहेगी। खाने-पीने की वस्तुओं पर भी आसक्ति नहीं होनी चाहिए। शरीर पर ममत्व भाव रहे तो वह भाव संसार में रुलाने वाला है। जल्दी मोक्ष जाने का रास्ता है समभाव। समभाव की आराधना चैतन्य से होगी। चैतन्य की आराधना से समभाव बढ़ेगा।***''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जब तक आप पर के अधीन रहोगे तब तक आप दु:खी बने रहोगे और जब आप स्व के अधीन हो जाओगे तब आप सुखी बन जाओगे। हम जितनी चीजों के अधीन बनेंगे उतने ही

हमारे सुख दूसरों के अधीन बनेंगे। जिस व्यक्ति की जीतने की दृष्टि हो जाती है, उसको जय से कोई नहीं रोक सकता।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने *''दिल में नाम तेश है, तू भगवान मेश है''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

युवा शिविर में श्री राजनमुनिजी म.सा. ने संकल्प सूत्र का विवेचन किया। महिला शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने शय्यातर, नवकारसी, पोरसी, एकासन, आयंबिल आदि का विस्तृत विवेचन किया। बच्चों के शिविर में साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रतिज्ञाकँवरजी म.सा. ने मोबाईल, टी.वी. के दुरुपयोग से बचने की प्रेरणा देते हुए नवकार महामंत्र की महिमा का वर्णन फरमाया। उभय गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती

06 जून। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के पावन श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**समय से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता। हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती। पुण्य का योग नहीं है तो कितने ही देवी-देवताओं की पूजा कर लो, कोई लाभ नहीं होगा। मेरे कर्मों का फल मुझे ही भुगतना पड़ेगा। अपने कर्मों का क्षय स्वयं को करना पड़ेगा। मन चिन्तामणि रत्न से कम नहीं है। मन ही बंधन व मोक्ष का कारण है। नन्दन मणिहार की बावड़ी में आसक्ति होने पर उसे बावड़ी में जन्म लेना पड़ा। देवता के राग आने पर देवता पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं। हम मन में जैसी भावना भाएँगे, वैसी परिणति होगी। हमें कर्मों के अनुसार सुख-दु:ख मिलते हैं। हमारी भावना सिर्फ अपने लिए नहीं अपितु संसार के सभी प्राणियों के सुखी रहने की होनी चाहिए।**''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गति धीमी होगी तो चलेगी, किन्तु हमारी दिशा सही होनी चाहिए। जिनका भी विकास हुआ है, हो रहा है और होगा, उनको मजबूत संकल्प लेना होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *''सुन्दर शासन, प्रभु महावीर का शासन''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

युवा शिविर में श्री राजनमुनिजी म.सा. ने संकल्प सूत्र का विवेचन किया। महिला शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने सम्यक्त्व के स्वरूप, नवकार महामंत्र एवं सिद्धांत संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। बालक-बालिका शिविर में साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री प्रतिज्ञाकँवरजी म.सा. ने संस्कार निर्माण सम्बन्धी ज्ञानार्जन कराया। बाहर के दर्शनार्थियों का ताँता लगा हुआ है। श्री साधुमार्गी जैन संघ, बड़ीसादड़ी की सेवा भावना सराहनीय रही।

300 दया व्रत की आराधना : एक कीर्तिमान

07 जून। भगवान महावीर को समर्पित प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् उपस्थित गुरुभक्तों को

आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने का सौभाग्य मिला। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''**खाओ, पीओ और मौज करो यह बहिरात्मा का लक्षण है, इसके बाहर इनकी सोच नहीं होती। वह कभी तृप्ति प्राप्त नहीं कर पाता। अंतरात्मा में जीने वाला जीवन निर्वाह हेतु जीता है। किसी भी परिस्थिति पर व्यक्ति यदि गर्व करता है तो शास्त्रकार कहते हैं कि उसे नीच गति मिलती है। वीवीआईपी भी कर्म से नहीं बच सकते। क्या हम कर्म करते वक्त सावधान हैं या जो होगा वैसे चलने दे रहे हैं? एक-एक पाई का लेखा है। 'आई जैन माई जैन' शिविर के माध्यम से बहिनें अपने भीतर रही शक्ति जागृत कर पाती हैं। सही जीवन जीने का फॉर्मूला है डी.एस.पी.।**

डी :- दिल से दर्शन करो। देखने व दर्शन करने में अंतर होता है। रोज दिल से दर्शन करने हैं, आँखों से नहीं।

एस :- सामायिक, स्वाध्याय आदि करना। सामायिक जीवन में प्रसन्नता एवं सकारात्मकता देने वाली है। स्वाध्याय हमें दर्पण दिखाता है कि हम कहाँ हैं।

पी :- प्रतिक्रमण करना। प्रतिक्रमण हमारे दोषों को दूर करने का प्रयत्न करता है।

महिला शक्ति यह चिन्तन करें कि अब मैं स्वयं को दुःखी नहीं बनाऊँगी। सुख मेरा नहीं है। दुःख मेरा नहीं है। आत्मा में रमण करने का आनंद मेरा है।''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हम जो भी कार्य कर रहे हैं उसमें एकाग्रता महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति या वस्तु में जितनी ज्यादा आसक्ति होगी, वह हमको डूबाने वाली है। '**आई जैन माई जैन**' शिविर की बहिनों ने गुरुचरणों में सुंदर अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। शिविर अनुभूति प्रस्तुत करते हुए बहिनों ने कहा कि शिविर में यतनापूर्वक जीवन जीने, शाश्वत सुख को प्राप्त करने, अच्छे संस्कारों को जीवन में आगे बढ़ाने, धर्म को सदैव आगे रखने की प्रेरणा मिली। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के दर्शन कर आज हमें नई ऊर्जा मिली है। लगभग 80 बहिनों ने 15 मिनट स्वाध्याय करने, साप्ताहिक सामायिक करने, प्रतिदिन 1 घण्टा मौन रहने, किसी भी परिस्थिति में आत्महत्या नहीं करने का संकल्प आचार्य भगवन् से ग्रहण किया। 300 से अधिक लोगों ने एक साथ दया व्रत करके कीर्तिमान स्थापित किया।

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने दया व्रत की सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत करते हुए सामायिक, स्वाध्याय प्रतिलेखन की प्रेरणा दी। श्री गगनमुनिजी म.सा. ने घर, स्थानक, व्यवहार और जीवन में यतना का सुन्दर विवेचन करते हुए हर कार्य में यतना विवेक का ध्यान रखने का आह्वान किया।

बड़ी दीक्षा सोल्लास सम्पन्न

08 जून। मंगल प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के पावन मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण करने का पावन अवसर प्राप्त कर गुरुभक्त धन्य-धन्य महसूस कर रहे हैं।

इतना सम्बल देना मेरे राम, तेरे पथ पे सदा चल सकें हम।
घोर कष्टों को सहकर खुशी से, अपनी मंजिल को वर सकें हम।।

युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.,

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में नवदीक्षिता *साध्वी श्री निरामयश्रीजी म.सा.*, नवदीक्षिता *साध्वी श्री लोकोत्तरश्रीजी म.सा.* एवं नवदीक्षिता *साध्वी श्री निर्ग्रन्थश्रीजी म.सा.* की बड़ी दीक्षा धर्मोल्लासपूर्वक चतुर्विध संघ की उपस्थिति में समता प्रवचन हॉल में सम्पन्न हुई।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं को पंच महाव्रत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के पालन हेतु तीन करण, तीन योग से प्रतिज्ञाबद्ध कर एवं सम्पूर्ण रूप से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह एवं रात्रिभोजन का त्याग कराकर उन्हें छेदोपस्थापनीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) प्रदान किया।

सम्पूर्ण विधि पूर्ण कराने के बाद अपने ओजस्वी प्रवचन में उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**आज नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं के सामायिक चारित्र के बाद छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करने का प्रसंग है। पहले अहिंसा व्रत में छोटे से छोटे प्राणी की रक्षा करना है। जहाँ अहिंसा है, वहाँ प्रसन्नता है और जहाँ हिंसा है, वहाँ दुःख है। अहिंसा वृत्ति जीवन का सुरक्षा कवच है। सुख नितान्त आत्मभावों में है। सुख हमारी आत्मा में है। बाहरी पुद्गलों में सुख नहीं है। क्रोध व लोभ झूठ को प्रेरित करते हैं। साधु को हँसने का सर्वथा निषेध किया गया है। प्रसन्नता अलग है व हास्य अलग है। तीसरे महाव्रत अचौर्य में बिना पूछे कोई वस्तु लेना नहीं। चौथे महाव्रत ब्रह्मचर्य में ब्रह्म में चर्या यानी आत्मभाव में रमण करना है। सच्चा सुख भोग में नहीं, त्याग में है। सदैव आत्मा में रमण करना है। पाँचवें अपरिग्रह में मेरा कुछ नहीं है। यह भाव सदैव स्मृति में रखना। व्यक्ति, वस्तु किसी से भी आसक्ति नहीं रखना। संग्रहवृत्ति से दूर रहना। रात को खाने-पीने का मन में विचार भी नहीं लाना। तीर्थंकर भगवान का महान उपदेश अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनासक्ति, समता आदि का दृढ़ता से पालन करना।**''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारी एक आँख हमेशा भावों पर टिकी रहनी चाहिए। जो व्यक्ति निरंतर अपने भावों में जागृत है, वह कभी दुःखी नहीं होता। साधक वही होता है जो जिनशासन में जागृत है।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *''संयम की महिमा क्या है, जो करके दिखा देना''* संयम गीत प्रस्तुत किया।

नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं ने अपने संकल्प-पत्र का वाचन करते हुए भावोद्गार में फरमाया कि हे भगवन्! आपने महान उपकार करके हमें अनमोल संयम रत्न दिया है। हम समिति, गुप्ति और पंच महाव्रतों का पालन कर अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके हर आदेश-निर्देश का हम पूर्ण पालन करेंगे। चारित्रात्माओं की सेवा के लिए हम सदैव तत्पर रहेंगे।

संघ अध्यक्षजी एवं महेश नाहटा ने त्यागी महापुरुषों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। सभा में उपस्थित अनेक भाई-बहिनों ने दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प लिया। मृत्युभोज नहीं करने का संकल्प भी अनेक लोगों ने लिया। वीर परिवारों का साधुमार्गी संघ द्वारा स्वागत किया गया।

09 जून। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आचार्यदेव ने मंगलपाठ प्रदान किया। समता प्रवचन हॉल में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''तीर्थंकर भगवान सारे जगत् को राह दिखाने वाले हैं और उनकी आज्ञा में चलने वाले सर्वस्व जीवन समर्पित करने वाले गुरु होते हैं। वे दिशा-निर्देश देते हैं कि पुरुषार्थ किस दिशा में करना है। सद्गुरु हमें जो उपदेश देते हैं, हमारा पुरुषार्थ उस दिशा में होना चाहिए। वह दिशा है कर्मों को नष्ट करने की दिशा। जन्म-मरण ही दुःख है। कर्मों के शत्रुओं को हमेशा परास्त करें। कर्मों ने आत्मा के चप्पे-चप्पे पर कब्जा जमा रखा है। हम ऊँचाई पर आरोहण चाहते हैं, पर संघर्ष नहीं करना चाहते। मेरे मन में कभी किसी के प्रति दुर्भावना न हो। तीर्थंकर देव सभी के प्रति वात्सल्य भाव रखते हैं, भले ही कोई उनका विरोध करे। दुःखों को दूर करने के लिए अभी मेहनत नहीं करेंगे तो कब करेंगे। सत्य समझ को जागृत करें। जन्म-मरण ही दुःख है। मनुष्य जीवन हमें मिला है, हमें पूरी ताकत के साथ कर्मों से युद्ध करने में लगना है। पूरा जीवन भी धर्म में लगाएँ तो कम है।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मान, अहंकार, ईर्ष्या को जीतना बहुत कठिन है। हमें कोई भी काम नाम के लिए नहीं अपितु निष्काम भाव से करना है। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत प्रतिदिन 1 घण्टा मौन रखने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। कई भाई-बहिनों ने इस वर्ष स्वाध्यायी सेवा देने का संकल्प लिया। नगर पालिका के पूर्व चेयरमैन सैफुदीनजी बोहरा व वर्तमान चेयरमैन विनोदजी कंठालिया ने गुरु दर्शन-सेवा का लाभ लिया।

10 जून, समता भवन, करजू। परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का बड़ीसादड़ी के ऐतिहासिक पावन प्रसंग के पश्चात् जय-जयकारों के साथ समता भवन, करजू में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिस चीज से दुःख मिलता है, वही सुख देती है। भीतर की मानसिकता बदलनी चाहिए। काया और मन की अपेक्षा वचन को बदलने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। अवगुण देखने वाला यदि सुखी हो तो ऐसे मानना पड़ेगा कि जैसे जहर पीने वाला व्यक्ति स्वस्थ है। मानव जीवन की सार्थकता ही भीतर से सुधरना है। 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास के प्रत्याख्यान एवं आज के दिन नकारात्मक नहीं बोलने का नियम कई लोगों ने लिया।

11 जून, तेजसिंहजी राजपूत का निवास, साटोला। प्रातःकालीन प्रार्थना पश्चात् सिरीवाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का जय-जयकारों के साथ माटोला में पधारना हुआ।

यहाँ राजपूत एवं रावला समाज के प्रमुखों ने महापुरुषों की अगवानी की। हवेली में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सत्संग से सुख मिलता है। इससे जीवन का कण-कण खिलता है। देव-गुरु-धर्म के प्रति हमारी गहरी श्रद्धा होनी चाहिए। अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म में जिसका मन लगा रहता है उन्हें मानव तो क्या देवता भी नमस्कार करते हैं।

इस अवसर पर व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान हुए। आस-पास के अनेक गाँवों के लोगों सहित रावला के राव साहब सुदर्शनजी, शूरवीर साहब, पूर्व प्रधान महावीरसिंहजी आदि ने गुरु दर्शन-सेवा का लाभ लिया एवं विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

स्थानीय लोगों को श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि प्रतिदिन आधा घण्टा प्रभु भक्ति करने और उसमें सांसारिक वस्तुओं की चाहना नहीं करने की प्रेरणा दी। कठिन परिस्थिति में मन की शांति बनाए रखने, गुरु, माता-पिता एवं दीन-दु:खियों की सेवा करने की प्रेरणा दी। व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए।

12 जून, देवली (प्रतापगढ़)। प्रात:कालीन दैनिकचर्या के पश्चात् परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ साटोला से देवली में बंशीलालजी टाक के निवास स्थान पर मंगलमय पदार्पण हुआ। ग्रामीणों ने दर्शन-सेवा का अनुपम लाभ लिया। श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने जैन संतों की गोचरी विधि की जानकारी प्रदान की।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा. एवं श्री गगनमुनिजी म.सा. ठाणा-2 ने गणेशपुरा में धर्मबोध प्रदान किया।

13 जून, गणेशपुरा (प्रतापगढ़)। प्रात:कालीन मंगलमय वेला में भगवान महावीर का प्रार्थना रूप में गुणानुवाद किया गया। प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-4 का जय-जयकारों के साथ देवली से विहार होकर गणेशपुरा में नक्षत्रमलजी वया के निवास पर मंगल पदार्पण हुआ। दोपहर में नीमच एवं आस-पास के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। रात्रि में ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साधु हमेशा बिना चप्पल के चलते हैं और अपने लिए खाना नहीं बनाते हैं और न बनवाते हैं। किसी के द्वारा उनके लिए बनाया हुआ खाना भी नहीं खाते। साधु तो बस आपके घर में जो कुछ बचा हुआ होता है, वही लेते हैं। साधु अपने पास कभी भी रुपया/पैसा नहीं रखते। सभी को रात्रिभोजन त्याग करना चाहिए। आप लोग ज्यादा त्याग नहीं कर सकते तो कम से कम दो दिन के लिए तो रात्रिभोजन का त्याग अवश्य ग्रहण करें। साथ ही म.सा.श्रीजी ने सम्पत्ति के लिए झगड़ा नहीं करने, मोबाइल का यथाशक्य त्याग करने, प्रात: उठते ही एवं भोजन से पूर्व 11 बार अरिहंत प्रभु का नाम लेने सहित अन्य कई शुभ संकल्प करवाये। वया परिवार व ग्रामीणों की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा. एवं श्री गगनमुनिजी म.सा. ठाणा-2 का छोटीसादड़ी में मंगल प्रवेश

हुआ। शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का पूर्व में ही छोटीसादड़ी पधारना हो गया है।

14 जून, छोटीसादड़ी जैन स्थानक, जूना बाजार। स्वर्णनगरी छोटीसादड़ी में अलौकिक महापुरुषों परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का गगनभेदी जय-जयकारों के साथ जैन स्थानक भवन में मंगल पदार्पण हुआ। विद्या निकेतन स्कूल में विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए जन-जन की आस्था के केन्द्र, विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**आज हम धर्मक्रिया कर रहे हैं, पर धर्म तक पहुँच पाए या नहीं? धर्मक्रियाएँ करते हुए भीतर से धर्म का संगीत पैदा होना चाहिए। धर्म हमारे भीतर प्रकट हुआ या नहीं? मेरे भीतर क्रोध, अहंकार कितना है? मैं छल-कपट तो नहीं कर रहा हूँ? मेरा लोभ, लालच कितना है? सामायिक कितनी भी कर लें उसका क्या महत्त्व है? थोड़ा-सा भी कोई प्रतिकूल बोले तो हमें क्रोध आ जाता है या नहीं? अनुकूल अच्छा लगता है। धर्म कहता है सहना सीखो। सहने की कोई सीमा नहीं है। कोई कितना भी कहे, पर मेरे सब्र का बाँध नहीं टूटेगा। शिकायत का भाव मन में पैदा क्यों होता है? धर्म का लेबल ऊँचा होगा तो शिकायत पैदा नहीं होगी। धर्म हमारे भीतर वात्सल्य पैदा करता है। धर्म स्थानक अब खाली हो रहे हैं और क्लब आबाद हो रहे हैं। धर्म नहीं करने पर हम भीतर से खाली हो जाते हैं। भीतर में सहनशक्ति बढ़नी चाहिए। धर्म से सहनशीलता बढ़ती है, वात्सल्य बढ़ता है।**''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में कुछ संकल्प लेना हो तो परेशानी होती है, लेकिन साधु कभी परेशान नहीं होता है। कभी परेशान होने का अवसर आ भी जाए तो अपनी परेशानी को किसी के सामने व्यक्त नहीं करना चाहिए। क्योंकि जहाँ दीनता आती है, वहाँ परेशानी होती है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

राजस्थान सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री श्रीचंदजी कृपलानी एवं पूर्व विधायक श्री अशोकजी नवलखा ने आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में उपस्थित हो दर्शन-सेवा का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

धर्म से बढ़कर कोई धन नहीं

15 जून, छोटीसादड़ी। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से सम्पूर्ण माहौल धर्ममय हो गया। प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा वर्षण करते हुए मांगलिक फरमाई। विद्या निकेतन स्कूल में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**मनुष्य जन्म देवदुर्लभ माना गया है। देवता भी यह भावना भाते हैं कि जब भी हमारा देवलोक से प्रयाण का अवसर आए तो हम मनुष्य जन्म प्राप्त करें और मनुष्य जन्म में भी श्रावक कुल में जन्म प्राप्त करें। कदाचित् पुण्य की कमी से श्रावक कुल नहीं मिला तो उनके यहाँ काम करने वाले कर्मचारी, नौकर-चाकर के घर जन्म मिले तो भी हमारा सौभाग्य है। ऐसा विचार देवता करते हैं। देवता जिसकी कामना करते हैं वो चीज हमें प्राप्त हो चुकी है। हम देवताओं से मनोतियाँ माँग रहे हैं। बहुत स्पष्ट बात है कि हमारा पुण्य प्रबल नहीं होगा तो कितने भी देव मना लो, पर कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना पुण्य व पाप है।**

हमें सत्य धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। जीना है तो धर्म के लिए और मरना है तो धर्म के लिए। धर्म के लिए जीएँगे, धन के लिए नहीं। धर्म करेंगे तो धन अपने आप आ जाएगा। धर्म से बढ़कर कोई धन नहीं है। जहाँ तृप्ति मिलती है, वहाँ सुख है। खाने से जो तृप्ति नहीं, वह तृप्ति तपस्या में मिलती है, खिलाने में मिलती है। तृप्ति त्याग से आती है।''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिसने अनादिकाल से हमें रुलाया, भटकाया और कष्ट दिया। सही पथ पर आने के बाद कुपथ पर ले गया। जो वस्तु हमारी सबसे बड़ी शत्रु है। जिसने हमें सामने से नहीं, पीठ के पीछे घाव दिया, ऐसी वस्तु है सुख। सुख नामक शत्रु ने जिस पर प्रहार किया उस व्यक्ति का दुर्गति से बचना कठिन है। वीरों के साथ रहोगे तो हमारे भीतर थोड़ी-बहुत वीरता आएगी और हम कायरों के साथ रहेंगे तो कायरता आएगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत फरमाया। सामूहिक दया के आयोजन में 108 भाई-बहिनों ने दया व्रत कर छ:काय के जीवों को अभयदान दिया। बाहर से दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। छोटीसादड़ी संघ की धर्मनिष्ठा, सेवा-भक्ति सराहनीय रही। पूरा मेवाड़ राम गुरु के पावन दर्शन कर, उनके श्रीमुख से जिनवाणी का श्रवण कर राममय हो गया। मेवाड़ के बाद पुन: मालवा के भाग्य का सितारा चमकने वाला है।

दीक्षा झलक

01 जून 2023, बड़ीसादड़ी। न वरघोड़ा, न अभिनन्दन, न पूर्व कोई घोषणा, न कोई मेहन्दी, न कोई चौबीसी, न कोई रक्षाबन्धन, न कोई केसर छंटाई, न कोई आरंभ-समारंभ, न कोई संगीत संध्या और हो गई सादगीपूर्ण दीक्षा। ऐसा ही प्रसंग बड़ीसादड़ी में देखने को मिला। सारी जनता हर्ष से अभिभूत होकर जय-जयकार कर रही थी।

साधना के शिखर पुरुष, युगनिर्माता, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में आज मुमुक्षु बहिन **कु. लक्कीजी सुराणा**, बेंगलुरु की दीक्षा पूर्व में ही घोषित थी। द्वय गुरु-भगवंतों की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर 27 वर्षीय मुमुक्षु बहिन **कु. नुपुरजी भूरा** सुपुत्री श्री आनन्दमलजी-चंदादेवी भूरा, सूरत/देशनोक (साध्वी श्री खामेमिश्रीजी म.सा. की संसारपक्षीय बहिन) मुमुक्षु लक्कीजी सुराणा के साथ साधुवेश धारण कर पावन गुरुचरणों में अचानक ही दीक्षा हेतु उपस्थित हो गईं और दीक्षा प्रदान करने हेतु गुरुचरणों में निवेदन किया। हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह गुरु-भगवंतों का अतिशय देखकर हर्षानुभूति के साथ जय-जयकार करने लगी।

आचार्य भगवन् ने महती कृपा कर दोनों मुमुक्षु बहिनों को जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। चतुर्विध संघ में केसरिया-केसरिया गीतों की गूँज कर्णगोचर हो रही थी। इस आदर्श दीक्षा की यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

-महेश नाहटा

तपस्या सूची	
तेला तप	**साध्वी श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निर्ग्रन्थश्रीजी म.सा.**
आजीवन शीलव्रत	जसकरणजी-उर्मिलादेवी सुराणा, बेंगलुरु, अशोकजी-कमलादेवी सुराणा, बेंगलुरु, प्रकाशचंदजी-कनकदेवी धाकड़, बड़ीसादड़ी, सरदारमलजी कांकरिया, इन्दौर, पारसमलजी-सुशीलादेवी कदमालिया, कंथारिया वाले, शांतिलालजी चावत, बसंतीलालजी-उमादेवी नागौरी, चेतनजी-वीनूजी मेहता, रणजीतमलजी-कमलादेवी कोठारी, छगनलालजी-जतनकुमारी गन्ना, बेंगलुरु, सुभाषजी-रेखाजी गादिया, श्रीनिवासजी सोनी, वीर पिता आनंदमलजी-चंदादेवी भूरा, सूरत/देशनोक, पद्मजी-जयश्रीजी कातरेला, विल्लुपुरम्, नानालालजी गड़वा
वर्षीतप	पाँचवाँ- भगवतीलालजी नागौरी दूसरा- संगीताजी अमरसिंहजी मेहता
अठाई	समीक्षाजी जैन
आजीवन अन्न का त्याग	नन्दलालजी सालवी, निकुंभ
आजीवन चौविहार	स्नेहलताजी डांगी, कौशल्याजी भूरा, प्रमिलाजी मोगरा
गाथा का स्वाध्याय	सवा लाख- कुसुमलताजी मेहता
उपवास	108- स्नेहलता डांगी
पोरसी	100- रेशमबाई धींग

-महेश नाहटा

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी 15–16 **अगस्त** 2023 का धार्मिक अंक '**श्रवण–विवेक/क्षमा–विवेक**' पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में 15–16 **सितम्बर** 2023 का धार्मिक अंक '**सेवा–विवेक, संघ–विवेक**' विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

श्रमणोपासक

विविध समाचार

:: मेवाड़ अंचल ::

उदयपुर। 'महत्तम महोत्सव-मेरा महोत्सव' के अन्तर्गत समता युवा संघ द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर जनजागरण के लिए पोस्टर चिपकाये गये। 4 जून, 2023 को संभाग के मुख्य केन्द्रीय कारागृह/सुधारगृह में भड़भूजा घाटी विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा. की आज्ञा से साध्वी श्री ऋतुश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री गुंजनश्रीजी म.सा. ने पधारकर प्रवचन फरमाया।

केन्द्रीय कारागृह के अधिकारियों की उपस्थिति में सैकड़ों कैदियों को जीवन का सार बताते हुए साध्वी श्री ऋतुश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि प्रत्येक व्यक्ति भौतिक सुख चाहता है। इस हेतु वह अपराध की दिशा में भी बढ़ जाता है। वह भौतिक सुख वास्तव में दु:ख का कारण ही बनता है।

सामूहिक रूप से ***"मेरे अपराधों की कर आलोचना, सब जीवों से करूँ मैं क्षमायाचना"*** गीत का संगान हुआ। साध्वीवर्याओं ने जैन धर्म के अहिंसा मंत्र के साथ सप्त कुव्यसन त्याग के लिए प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ अध्यक्ष, मंत्री एवं विभिन्न प्रकल्पों के संयोजकगणों की उपस्थिति रही। आयोजन पश्चात् कारागृह अधीक्षक गोविन्दजी को साहित्य भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

-अल्पेश धाकड

:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::

देशनोक। समता महिला मण्डल की नवीन कार्यकारिणी का गठन 24 अप्रैल 2023 को सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वानुमति से अध्यक्ष सरिताजी बरड़िया, महामंत्री निशाजी भूरा, सहमंत्री उर्मिलाजी भूरा तथा कोषाध्यक्ष मुन्नीबाई बैद का मनोनयन हुआ।

मुमुक्षु बहिन सुश्री लक्कीजी सुराणा का 27 मई को यहाँ पधारने पर स्थानीय संघ एवं महिला मण्डल द्वारा भावभीना स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। उपस्थित जनों ने आपके त्याग एवं वैराग्य भावों की अनुमोदना एवं प्रशंसा की।

शासन दीपक श्री राकेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में **'आध्यात्मिक साधना कैसी हो'** विषय पर तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 20 बहिनों ने भाग लिया। अपने पावन प्रवचन में म.सा. ने फरमाया कि साधना का मुख्य उद्देश्य कषाय कम करके जीवन को परिवर्तित करना होना चाहिए, तभी हम अपने मोक्ष लक्ष्य की ओर बढ़ सकेंगे।

स्थानीय संघ की त्रय शाखाओं द्वारा 11 जून 2023 को आयोजित **'रियल रामेश रत्न'** कार्यक्रम में विभिन्न आयुवर्ग अनुसार ज्ञानार्जन करवाया गया। विभिन्न विषयों पर बच्चों को प्रस्तुतिकरण सिखाया गया। प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी एवं सामायिक सूत्र याद करने वालों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संघ, महिला

समिति एवं युवा संघ के अध्यक्ष, मंत्रीगण सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। पाठशाला में आने वाले बच्चों को बैग वितरित किये गये। **-आशीष बुच्चा**

गंगाशहर-भीनासर। आचार्य श्री नानेश जन्मदिवस के पावन अवसर पर 19 से 21 मई तक तीन दिवसीय समीक्षण ध्यान योग शिविर का आयोजन जैन जवाहर विद्यापीठ में डॉ. सत्यनारायणजी शर्मा के सान्निध्य में हुआ। आपने कहा कि व्यस्ततम जीवनचर्या में से कुछ समय निकालकर योग करें और स्वस्थ रहते हुए तनावमुक्त रहें।

शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा. के मंगलपाठ से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। आपश्रीजी ने आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन समीक्षण ध्यान के बारे में सारगर्भित विवेचन फरमाया। संघ मंत्री ने आभार ज्ञापित किया।

पटवा निवास में शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में धर्म-ध्यान का ठाठ लगा रहा। समता शाखा में आशातीत उपस्थिति रहती है। अक्षय तृतीया पर साध्वीश्रीजी ने फरमाया कि भगवान ऋषभदेव प्रथम राजा, प्रथम तीर्थंकर, प्रथम भिक्षु हैं। आपके प्रथम वर्षीतप का पारणा श्रेयांसकुमार के हाथों इक्षुरस से सम्पन्न हुआ। तब से यह दिन 'अक्षय तृतीया' कहलाने लगा।

साध्वी श्री मीताश्रीजी म.सा. ने मधुर गुरुभक्ति गीत फरमाया एवं साध्वी श्री निशान्तश्रीजी म.सा. ने आचार्य श्री रामेश की अद्‌भुत देन आध्यात्मिक आरोग्यम् के नौ बिन्दुओं तथा संघ महिमा का विवेचन किया। सामूहिक समता शाखा, दयाभाव एवं 7-7 सामायिक का आयोजन 7 मई को किया गया, जिसमें 75 लोगों ने भाग लिया। **-विमलकुमार सेठिया**

:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::

ब्यावर। समता विभूति आचार्य श्री नानेश का जन्मदिवस पर्यायज्येष्ठ श्री नरेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-13 के सान्निध्य में समता भवन में मनाया गया। प्रवचन सभा में श्री अनन्तमुनिजी म.सा ने फरमाया कि नाना गुरु ने सरलता, विनम्रता से हम सबको मोक्ष जाने का रास्ता बताया। उनका प्रभाव ऐसा ही विशिष्ट था।

श्री हिमांशुमुनिजी म.सा. ने भजन *''गुरु नानेश समताधारी थे, हम सबके उपकारी थे''* के साथ फरमाया कि आज का दिन प्रेरणादायक है। आचार्य श्री नानेश के भीतर करुणा, दया भरी हुई थी और उनके ये ही गुण उनको महापुरुष निरूपित करते हैं।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री नानेश सदैव आत्मा की सुनते थे। चाहे उन पर कितने ही परीषह आए, पर वे घबराए नहीं, अपितु सिद्ध मार्ग पर आगे बढ़ते गए। श्री यत्नेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज का दिन प्रेरणादायी है।

महासती श्री अनाकारश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि हमें अपने भीतर भरे बारूद को बाहर निकालना होगा। सोचने वाली बात है कि हम बदल नहीं पा रहे। साध्वी श्री शाश्वतश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री सुखदाश्रीजी म.सा. ने भी गद्य-पद्य में उद्‌बोधन फरमाया तथा कई अन्य वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये।

-नोरतमल बाबेल

उखलाना। शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में अपूर्व

धर्मोद्योत हुआ। आपश्रीजी का 24 अप्रैल को अलीगढ़ से विहार कर उखलाना जैन स्थानक में मंगल पदार्पण हुआ। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा, दोपहर में महिलाओं एवं बालक-बालिकाओं के लिए संस्कार निर्माण शिविर आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। शिविर में मुनिरत्नों ने जैनत्व के नियमों का विश्लेषण फरमाया। सायं प्रतिक्रमण पश्चात् प्रश्नोत्तरी में जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का समाधान किया गया।

ज्येष्ठ सुदी 2 आचार्य श्री नानेश के 103वें जन्मदिवस के प्रसंग पर 140 आयंबिल, 160 एकासन, उपवास, बेला तेला आदि तपाराधना हुई। प्रवचन में शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. ने गुरु गुणगान करते हुए गुरुदेव के अतिशयकारी जीवन के अनेक प्रसंग उपस्थित किये। इस प्रसंग पर आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं की भी उपस्थिति रही।

मुनिवृंद का 23 मई को प्रात: विहार हुआ, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने जय-जयकारों के साथ विहार सेवा का लाभ लिया। **-रतनलाल जैन**

:: मालवा अंचल ::

रतलाम। महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा समता शिक्षा निकेतन में आवासीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 250 से अधिक बच्चों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाया। संस्कार गतिविधि की राष्ट्रीय प्रमुख एवं स्थानीय प्रमुख के निर्देशन में प्रवीणजी सेठिया ने व्यक्तित्व विकास, अंशुलजी मुणत ने वक्तृत्व कला, डॉ. अंजलिजी जैन ने प्राकृतिक चिकित्सा, आरतीजी गांधी एवं जैनलजी बोरदिया ने वैदिक मैथ्स, संजयजी चपरोट ने ध्यान तथा धार्मिक कक्षा में प्रीतिजी मुणत व स्थानीय पाठशाला शिक्षिकाओं ने सेवाएँ दीं।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. एवं समता सदन विराजित साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में प्रतिदिन बालिका वर्ग का सायंकालीन प्रतिक्रमण हुआ। बालकों को सन्तोषजी मुणेत ने प्रतिक्रमण करवाया।

शिविर के दौरान 7 मई को प्रात: लगभग 200 लोगों का नैतिक संदेशों का उद्घोष करते हुए प्रभात फेरी के रूप समता शाखा में पहुँचना हुआ। शासन दीपक श्री सुमितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में बच्चों ने प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। दोपहर में साध्वी श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने बच्चों को छठे आरे का वर्णन समझाया।

शिविर समापन समारोह में स्वागत भाषण पश्चात् शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री, महत्तम महोत्सव संयोजक एवं संयोजन सहयोगी की गरिमामय उपस्थिति रही। बच्चों ने शिविर में सीखे हुए ज्ञान पर मनमोहक प्रस्तुति दी। शिविर में हुई विभिन्न गतिविधियों के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। शिविर का सफल बनाने में सभी का पूर्ण सहयोग रहा।

इन्दौर। समता भवन यशवंत निवास रोड में समता संस्कार पाठशाला के बच्चों हेतु **'रियल रामेश रत्न'** लेवल 1 प्रतियोगिता का आयोजन 11 जून को किया गया, जिसमें 45 बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों में संस्कारों का सिंचन किया गया। बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी।

वक्ताओं ने अपने आशीर्वचन में बच्चों को समाज का कर्णधार बताते हुए कहा कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि हमारे बच्चे पाठशाला में अवश्य पहुँचें। बच्चे ही समाज की रीढ़ की हड्डी हैं।

पाठशाला प्रभारी ने विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। कार्यक्रम में गणमान्यजनों सहित पदाधिकारियों एवं समाजजनों की उपस्थिति रही। विजेता बच्चों सहित सभी बच्चों को सम्मानित किया गया।

-रंजना सूर्या

:: छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ::

खरियार रोड। व्यसनमुक्ति सप्ताह के अन्तर्गत 4 जून 2023 को व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन किया गया। आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के व्यसनमुक्ति संदेशों एवं नारों के माध्यम से जनजागरण किया गया। रैली में जैन समाज के साथ-साथ गुरुकुल आश्रम, आमसेना सिक्ख समाज, मारवाड़ी युवा मंच एवं अन्य अनेक संस्थाओं के लोगों ने लिया। रैली पश्चात् बालासोर ट्रेन दुर्घटना में मारे गये लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए नवकार महामंत्र का जाप कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। श्री साधुमार्गी जैन संघ अध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

-विकास कुमार सोनी

टिटलागढ़। शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 का 20 मई को टिटलागढ़ तेरापंथ भवन से 5 किमी. विहार कर जगुआ साधना केन्द्र में विराजना हुआ। स्थानीय गुरुभक्तों ने विहार सेवा का लाभ लिया। **-रतनलाल जैन**

:: कर्नाटक-आन्ध्रप्रदेश अंचल ::

बेंगलुरु। शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-7 के पावन सान्निध्य में 26 से 28 मई 2023 तक त्रिदिवसीय ज्ञान ज्योति शिविर का आयोजन समता प्रचार संघ के तत्वावधान में श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु द्वारा समता भवन विजयनगर में आयोजित किया गया। शिविर में प्रतिक्रमण कंठस्थ एवं पूर्णकालिक उपस्थिति की पात्रता के साथ 115 शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रात:कालीन प्रतिक्रमण के साथ प्रारंभ होकर रात्रि 9:30 बजे तक शिविर गतिमान रहता। ***''राम गुरु की नौका चली''*** गीत के मुखड़े से प्रतिभागियों का उत्साह द्विगुणित हो जाता।

चारित्रात्माओं द्वारा भाव प्रतिक्रमण कैसे जीवन में समाधि पैदा करता है, गौरवशाली आचार्यों ने अपने क्रांतिकारी एवं सम्यक् निर्णयों से साधुमार्गी संघ की अविच्छिन्न धारा को जाज्वल्यमान बनाया, अन्तकृद्दशांग सूत्र के माध्यम से आगमिक शुद्धता आदि विषयों का विवेचन किया गया। वीर पिता अशोकजी नागौरी एवं वीर पिता निर्मलजी संघवी सहित अनेक वक्ताओं द्वारा शिविरार्थियों को स्वाध्यायी सेवा द्वारा धर्म प्रभावना, प्रात:काल ध्यान, योग प्राणायाम में सूर्य नमस्कार को नवकार महामंत्र के आधार पर करना, अहोभाव वंदना, वक्तृत्व कला आदि सिखाया। शिविरार्थियों को रोचक धार्मिक एवं मैनेजमेंट एक्टिविटी करायी गयी। शिविर के विशेष आकर्षण में तीन-तीन की लाइन में सामायिक वेश में प्रात:काल ईर्यापथिकी विहार का अभ्यास कराया गया। विहार से पूर्व साध्वी श्री दिव्यदेशनाश्रीजी म.सा. ने अहिंसा व एकाग्रता पर ध्यान दिलाया। लौटने के पश्चात् रोचक अनुभवों पर खुली चर्चा हुई।

शिविर एडमिन ने मंगलाचरण किया। शिविर समापन पर शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। 21 जनों ने स्वाध्यायी सेवा देने हेतु स्वीकृति प्रदान की। श्री जैन युवा संगठन के अध्यक्ष ने आगंतुकों को सम्बोधित किया। संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने मधुर स्मृतियों

से सभी को अभिभूत कर दिया। संघ शिखर सदस्य, महिला समिति की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा, महत्तम महोत्सव संयोजक, समता प्रचार संघ संयोजक मण्डल सदस्य आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। समता प्रचार संघ कर्नाटक अंचल प्रतिनिधि द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

:: तमिलनाडु अंचल ::

चेन्नई। समता प्रचार संघ एवं श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के संयुक्त तत्वावधान में श्री साधुमार्गी जैन संघ, चेन्नई द्वारा 19 से 21 मई 2023 तक समता भवन कोंडीतोप में त्रिदिवसीय ज्ञान ज्योति शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 9*0 शिविरार्थियों ने भाग लिया। वीरभ्राता वरिष्ठ स्वाध्यायी दिलीपकुमारजी वया ने 'लक्ष्मण रेखा' एवं 'चलो अपना घर ढूँढ़ते हैं' विषय पर उद्‌बोधन दिया, जिसके परिणामस्वरूप शिविरार्थियों एवं समापन समारोह में उपस्थित महानुभावों ने किसी भी परिस्थिति में धर्म परिवर्तन नहीं करने, आत्महत्या नहीं करने तथा घर से न भागने की प्रतिज्ञा ग्रहण की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पेरम्बूर के संभाग संघचालक पार्श्वकुमारजी जैन सहित अन्य अनेक वक्ताओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। समता युवा संघ के राष्ट्रीय शिविर संयोजक ने प्रोजेक्टर के माध्यम से रोचक एक्टिविटी के साथ वक्तृत्व कला में निपुण बनने के गुर सिखाये।

शिविर समापन समारोह समता प्रचार संघ के संयोजक मण्डल सदस्य की अध्यक्षता में हुआ। आपने अपने उद्‌बोधन में ज्ञान-ध्यान को आगे बढ़ाने एवं स्वाध्यायी सेवा से जुड़ने की प्रेरणा दी। शिविर एडमिन ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम के चारों इकाइयों के पदाधिकारी व सदस्यगणों की उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन संघ मंत्री ने किया।

-कन्हैयालाल झामड़

:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::

शिंदखेड़ा। नवनिर्मित समता भवन का लोकार्पण 4 जून को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं राष्ट्रीय महामंत्रीजी की उपस्थिति में भूमिदाता, दानवीर लुंकड़ परिवार की ओर से श्रीमती कमलादेवी नैनसुखजी लुंकड़, जलगाँव के करकमलों से सम्पन्न हुआ। प्रातः समता शाखा के पश्चात् शासन दीपक श्री पद्ममुनिजी म.सा. के सान्निध्य में हुई प्रवचन सभा में श्री सौरभमुनिजी म.सा. ने सामूहिक एकता व जप, प्रार्थना, धर्म ध्यान से लाभ एवं शुभ कर्मबंध का विश्लेषण किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपनी अभिव्यक्ति में संघ की गतिविधियों एवं गुरुदेव के आयामों से धर्म आराधना द्वारा जन-जन को जोड़ने हेतु प्रेरित किया। तत्पश्चात् एक अलग कार्यक्रम में समता भवन का लोकार्पण महाराष्ट्र के अनेक क्षेत्रों से पधारे गणमान्यजनों की उपस्थिति में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। लोकार्पण एवं अतिथि सत्कार के बाद भवन निर्माण में अर्थ सहयोगी दानदाताओं का सम्मान शिंदखेड़ा संघ द्वारा किया गया।

इस गरिमामय कार्यक्रम में भूमिदाता एवं वीर पिता राजेन्द्रजी लुंकड़ सपरिवार, स्थानकवासी संघ अध्यक्ष, मूर्तिपूजक संघ अध्यक्ष, महिला समिति उपाध्यक्ष, युवा संघ मंत्री, आंचलिक पदाधिकारीगण सहित अन्य अनेक स्थानों के गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम की सफलता में समता परिवार शिंदखेड़ा का विशेष सहयोग रहा।

-रविन्द्र कोटड़िया

धरणगाँव। शासन दीपक श्री पद्ममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 का 10 मई 2023 को यहाँ मंगल पदार्पण हुआ। आपश्रीजी के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञान-ध्यान, रात्रि ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। आपश्रीजी ने जिज्ञासुओं के प्रश्नों का सटीक समाधान दिया।

श्री सौरभमुनिजी म.सा. ने प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन देकर सकल संघ में जोश भर दिया। कई भाई-बहिनों ने एकासन, आयंबिल, उपवास आदि के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। रविवारीय समता शाखा में अच्छी उपस्थिति रही। आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। संतवृन्द का अमलनेर की दिशा में विहार हुआ।

:: बंगाल, बिहार, नेपाल एवं भूटान अंचल ::

हावड़ा। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 15 से 58 वर्ष आयु वर्ग के लिए त्रिदिवसीय ज्ञान ज्योति शिविर का आयोजन 16 से 18 जून 2023 को किया गया, जिसमें लगभग 75 लोगों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को शासन दीपिका साध्वी श्री समियाश्रीजी म.सा आदि ठाणा-4 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। साध्वीवृंद ने 'आगमिक कहानियों के मोरल', 'सम्यक्त्व और मिथ्यात्व' तथा 'पंच महाव्रत' आदि विषयों पर उद्बोधन फरमाया।

वीरमाता श्रीमती चंदाजी गुलगुलिया ने 'शासन सेवा', समता प्रचार संघ के सोनूजी मुणोत, रतलाम ने 'वक्तृत्व कला' निखारने के सूत्र, श्वेताजी बच्छावत ने 'वीजन एण्ड पेशन, टाइम मैनेजमेंट' आदि विषयों पर रोचक एवं सारगर्भित जानकारी दी। एडमिन के रूप में रतलाम से मनसुखजी गाँधी एवं प्रवीणाजी मुणोत उपस्थित थे। हावड़ा संघ की ओर से निर्मलजी सेठिया को शिविर संयोजक नियुक्त किया गया। सभी कार्यकर्ताओं ने एकजुटता परिचय देकर शिविर को सफल बनाया।

-प्रवीण कुमार बैद

:: पूर्वोत्तर अंचल ::

सिलचर। दिनांक 21 मई को समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का जन्मदिवस प्रार्थना, भजन, नानेश चालीसा व गुणानुवाद के साथ मनाया गया। संघ अध्यक्षजी ने आचार्य प्रवर का गुणानुवाद किया। प्रार्थना सभा में अच्छी उपस्थिति रही। रविवारीय समता शाखा का भी आयोजन हुआ।

महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत 04 जून को व्यसनमुक्ति विषय पर बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 50 बच्चों ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एडिशनल पुलिस सुब्रतो सेन ने श्री साधुमार्गी जैन संघ के नशामुक्ति कार्यक्रम के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ अध्यक्षजी ने की एवं मंत्री ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में समता महिला मण्डल एवं समता युवा संघ के अध्यक्ष भी उपस्थित थे।

05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर कछाड़ कैंसर हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का सफल आयोजन श्री स्थानकवासी साधुमार्गी जैन संघ द्वारा किया गया, जिसमें डॉक्टर्स के साथ संघ प्रमुखगणों ने वृक्षारोपण किया। समता सेवा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क पौधे उपलब्ध करवाये गये।

-प्रकाशचन्द सुराना

प्रवास समाचार

केन्द्रीय पदाधिकारियों का मालवा अंचल प्रवास सम्पन्न

मध्यप्रदेश अंचल के रतलाम, बदनावर, कानवन तथा इंदौर क्षेत्र का एक दिवसीय प्रवास राष्ट्रीय अध्यक्षजी के नेतृत्त्व में 2 जून 2023 को सम्पन्न हुआ। प्रवास के दौरान श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला समिति, समता युवा संघ के केन्द्रीय एवं स्थानीय पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों व संघ सदस्यों के साथ रतलाम, बदनावर एवं कानवन में सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मंत्री भी उपस्थित रहे। सभाओं में संघ द्वारा संपादित विभिन्न गतिविधियों तथा प्राप्त सुझावों पर विस्तार से चर्चा की गयी। राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने संघ कार्यों को संगठन के माध्यम से गतिशील बनाने एवं **'महत्तम महोत्सव'** में अधिक से अधिक जुड़ाव हेतु आह्वान किया। प्रवास के दौरान **'इदं न मम'** से जुड़ने हेतु विशेष प्रभावना की गयी तथा श्री साधुमार्गी जैन संघ कानवन ने संघ आबद्धता के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की। **-राष्ट्रीय मंत्री**

महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत बीकानेर-मारवाड़ अंचल में दो दिवसीय प्रवास

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव **'महत्तम महोत्सव - मेरा महोत्सव'** के अन्तर्गत दिनांक 3 व 4 जून को नागौर, अलाय, पांचू, नोखा, नोखागाँव, देशनोक, गंगाशहर-भीनासर, बीकानेर आदि क्षेत्रों का सघन प्रवास सम्पन्न हुआ। प्रवासी दल में महत्तम महोत्सव के अंचल प्रमुख, तीनों इकाइयों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मंत्री, कार्यकारिणी सदस्य आदि ने नागौर से प्रवास का शुभारंभ किया। प्रथम दिवस नागौर के साथ अलाय, पांचू, नोखा आदि क्षेत्रों में सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें आस-पास के स्थानों के गुरुभक्तों ने भी उपस्थिति दर्ज करवायी। प्रवास के दौरान नोखा में शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ लिया। रात्रि विश्राम नोखा गाँव में हुआ।

अगले दिन प्रातः नोखागाँव से प्रवास का शुभारंभ हुआ। इस दिवस देशनोक, गंगाशहर-भीनासर व बीकानेर आदि क्षेत्रों में भी सभाओं का आयोजन हुआ। मार्गवर्ती क्षेत्रों में शासन दीपक श्री राकेशमुनिजी म.सा., श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा., शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा., शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा., शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेताश्रीजी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा., पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा., शासन दीपिका

साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त किया।

सभी क्षेत्रों की सभाओं में आशातीत उपस्थिति रही। प्रवासी दल ने सभी स्थानों पर महत्तम महोत्सव के 9 बिन्दुओं पर विस्तृत विवेचन देते हुए पी.पी.टी. आदि के माध्यम से समझाया और इनसे अधिकाधिक जुड़ने का आह्वान किया। साथ ही पूर्व में जुड़े हुए लोगों की जानकारी भी इन सभाओं में दी गयी तथा क्षेत्रों के महत्तम महोत्सव प्रमुखों व प्रवृत्ति संयोजकों से विशेष चर्चा कर संघ के प्रत्येक सदस्य को इस प्रकल्प से जोड़ने की प्रेरणा दी। इस हेतु सुझाव भी आमंत्रित किये गये।

प्रवासी दल की प्रभावना से प्रेरित होकर अनेक स्थानों पर भाई-बहिनों एवं बच्चों ने प्रकल्प से जुड़ने हेतु फॉर्म भरकर संकल्प लिये। सभी स्थानों पर प्रवासी दल का स्थानीय संघों द्वारा स्वागत-अभिनंदन किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने आगंतुकों का आभार ज्ञापित किया।

-सुरेश बच्छावत

:: भक्ति रस ::

आओ सीखें धर्म-विवेक

-राखी अलिझाड़, मुक्ताईनगर

आओ सीखें-समझें हम धर्म-विवेक,
बन जाएँ हम इंसान नेक।

उठते-बैठते, चलते-फिरते रखें ध्यान,
छोटे से छोटे जीव के भी ना जाएँ प्राण।
कदम रखना देखकर, तुम हर एक,
आओ सीखें-समझें हम धर्म-विवेक।।

अपनी इंद्रियों पर रखना सीखो वश,
तभी पाओगे धर्मोन्नति, ज्ञान का यश।
भोग-विलास देते हैं रोग अनेक,
आओ सीखें-समझें हम धर्म-विवेक।।

वाणी ऐसी बोलिये, ना पहुँचे किसी को ठेस,
सभी को मिले सम्मान, दुःख पहुँचे ना मात्र लेस।
कषायों से दूर रहकर, करें सद्भाव से मन को चैक,
आओ सीखें-समझें हम धर्म-विवेक।।

कर्त्तव्यों का पालन करना ही है सच्चा धर्म,
हर कार्य को यतनापूर्वक, यह है धर्म का मर्म।
तप, दान, भाव, ज्ञान से हो जीवन की देख-रेख,
आओ सीखें-समझें हम धर्म-विवेक।।

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

लगभग 9 माह पूर्व प्रारंभ **'महत्तम महोत्सव'** विविध प्रकल्पों/परीक्षाओं के माध्यम से आगे बढ़ रहा है। जून माह में कुछ परीक्षाओं के परिणाम घोषित किये गये, वे इस प्रकार हैं-

(1) कर्म तत्त्वज्ञ:

ज्ञानार्जन अंतर्गत कर्म तत्त्वज्ञ (श्रावकों के लिए) भाग C की परीक्षा में लगभग 60 श्रावकों ने भाग लिया था। उनके परिणाम व्हाट्सएप्प के माध्यम से घोषित किये गये।

(2) श्रुत भ्रमण (अन्तगडदसाओ सूत्र पर आधारित ओपन बुक परीक्षा)

ओपन बुक परीक्षा के इस प्रकल्प में लगभग 1000 परीक्षार्थियों ने भाग लिया, जिन्हें महत्तम महोत्सव आयोजन समिति द्वारा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है और टॉप 3 अंचल विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान की गयी। श्रुत भ्रमण के अंतर्गत आगामी ओपन बुक परीक्षा (**जिणधम्मो-** आगार धर्म/अणगार धर्म) पर आधारित रहेगी। पूर्व में रजिस्टर्ड प्रतिभागी स्वयं तो इस प्रकल्प से जुड़ें ही साथ ही नए प्रतिभागियों को भी जोड़ने की प्रेरणा करें। प्रकल्प से जुड़ने हेतु रजिस्ट्रेशन जारी है।

स्वाध्याय प्रवृत्ति के अंतर्गत भी एक ओपन बुक परीक्षा का प्रकल्प है, जिसमें आचार्य भगवन् के प्रवचन/चिंतन पर आधारित पुस्तकों के विचार जीवन में उतारने के लिए श्रावक/ श्राविकाएँ इन पुस्तकों का पठन करें और फिर ओपन बुक प्रकल्प से भी जुड़ें।

गत वर्ष सम्पन्न तीन पुस्तकों (आरोह, प्रणव, नीरव का रव) पर आयोजित ओपन बुक परीक्षा के परिणाम घोषित हो चुके हैं।

इन सभी विजेताओं को क्रमशः 7100/-, 5100/- एवं 3100/- रुपये की इनाम राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। जोनल लेवल पर 3 विजेता, अंचल लेवल पर 3 विजेता और 20 रनरअप घोषित किये गये हैं। इन्हें भी पुरस्कृत किया जाएगा।

आगामी वर्ष में **भ्रामरी, ब्रह्माक्षर** और **आई टू आई** (हिंदी) पर ओपन बुक परीक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू है। सभी इस प्रकल्प से अवश्य जुड़ें।

महत्तम महोत्सव के शेष प्रकल्पों की जानकारी समय-समय पर श्रमणोपासक के माध्यम से आप तक पहुँचाई जाएगी। महत्तम महोत्सव की प्रभावना करते हुए प्रत्येक परिवार के हर एक सदस्य को महोत्सव से जोड़ना है। कम से कम एक प्रकल्प से तो जुड़ना ही है और श्रेष्ठ संयमी जीवन महोत्सव को महत्तम बनाना है।

महत्तम महोत्सव की आंचलिक प्रभावना हेतु तीनों इकाइयों के रा. उपाध्यक्ष, मंत्री एवं अंचल प्रमुखगणों द्वारा महत्तम आंचलिक प्रवास निष्पादित किया जा रहा है। केन्द्रीय टीम द्वारा बनाए गए प्रशिक्षण मॉड्यूल को **'महत्तम महोत्सव'** नाम देते हुए अंचल के हर क्षेत्र, हर परिवार तक पहुँचाना इस प्रवास का लक्ष्य है।

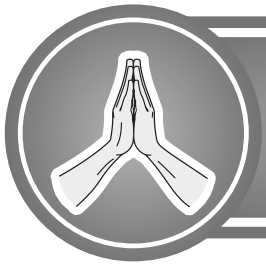

विविध भेंट मार्फत

01 अप्रैल से 30 अप्रैल 2023

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, जिससे विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

68000/- श्री अखेराजजी ओस्तवाल, दुर्ग

समता भवन निर्माण प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

501111/- श्री माणकचंदजी जैन, श्यामपुरा सवाईमाधोपुर

समता भवन, चिकलाकासा

11000/- श्री चंद्रशेखर जैन, नागदा

11000/- श्रीमती पुष्पादेवी बाबुलालजी सेठिया, रतलाम

समता भवन, धुले

11000/- श्री चंद्रशेखर जैन, नागदा

11000/- श्रीमती पुष्पादेवी बाबुलालजी सेठिया, रतलाम

समता भवन, शिरपुर

25000/- श्री चंद्रशेखर जैन, नागदा

25000/- श्रीमती पुष्पादेवी बाबुलालजी सेठिया, रतलाम

समता भवन, शिंदखेड़ा

25000/- श्रीमती पुष्पादेवी बाबुलालजी सेठिया, रतलाम

समता भवन, संगरिया

50708/- श्री विनेश दौलतरामजी जैन, संगरिया

जीवदया

11000/- श्री शुभकरनजी ऋषभजी यशजी संचेती, गुलाबबाग (मनोजजी संचेती की पुण्यस्मृति में)

5100/- श्री कन्हैयालालजी कैलाशजी रांका, पुरी (संपतलालजी रांका की पुण्यस्मृति में)

5000/- गुप्तदान, अहमदाबाद

5000/- गुप्तदान, अहमदाबाद

2100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री विजयकुमारजी पंकजजी अथर्वजी बैद, चेन्नई/भीनासर (कमलादेवी बैद एवं नवरत्नजी बैद की पुण्यस्मृति में), रमादेवी खटोल, बीकानेर (शांतिलालजी खटोल की पुण्यस्मृति में), श्री हस्तीमलजी सामरा, ब्यावर (बुधराजजी एवं चंचलदेवी सामरा की पुण्यस्मृति में), श्री ऋषभजी सामरा, कटुमनारकोइल, गुप्तदान, श्रीमती भंवरीदेवी सेठिया, उदासर/कोलकाता (साराबाई सुराना की पुण्यस्मृति में), श्रीमती भंवरीदेवी सेठिया, उदासर/कोलकाता (गिरधारीजी सेठिया की पुण्यस्मृति में), गुप्तदान

2000/- श्री संपतलालजी सेठिया, गोलकगंज

1100/- श्री अमृतलालजी चौधरी, जावद

1100/- श्री ताराचंदजी नाहटा, राजनांदगाँव

1100/- श्री कैलाशचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर

1000/- श्री हनुमानमलजी बोथरा, गोलकगंज

1000/- श्री पूनमचंदजी बोथरा, गोलकगंज

600/- श्री कैलाशचंद जैन, सवाईमाधोपुर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री धीरजकुमारजी सेठिया, गोलकगंज (सालगिरह के उपलक्ष में), श्री जसकरणजी सवितादेवी सिपानी, गंगाशहर, श्री जय शाह, राजनांदगाँव (पुत्र अर्हम के प्रथम जन्मदिवस पर)

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

100000/- श्री राजकुमारजी अक्षयजी नाहर, जयपुर

46000/- श्री भीखमचंद बच्छावत परिवार, अहमदाबाद (भीनासर में प्याऊ के वाटर कूलर हेतु)

5100/- श्री महेंद्रकुमारजी गणेशमलजी मेहता, सूरत

4000/- श्री पारसमल दौलतराम जैन, मुंबई

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

160000/- अनुपमाजी डॉ. सुनील एम. जैन निधि एवं यश जैन, इंदौर

साहित्य आजीवन सदस्यता सहयोग

1000/- श्री सज्जनराजजी कमलेशजी कोठारी, चेन्नई

समता मिति योजना

5000/- श्री शुभकरणजी ऋषभजी यशजी संचेती, गुलाबबाग (मनोजजी संचेती की पुण्यस्मृति में)

समता संस्कार पाठशाला

2000/- श्री विजयकुमारजी पंकजजी अथर्वजी बैद, चेन्नई/भीनासर (कमलादेवी एवं नवरत्नजी बैद की पुण्यस्मृति)

501/- मोनालिसाजी जैन, रायपुर

500/- श्री कन्हैयालालजी विनयकुमारजी सेठिया, गंगाशहर

500/- मोनालिसाजी जैन, रायपुर

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

11000/- श्री धर्मीचंदजी रांका, विजयनगर

5100/- श्री धर्मीचंदजी नंदावत, मैसूर

2100/- श्री राजेशकुमारजी अक्षयकुमारजी दशोरिया, भदेसर

2100/- श्री जवरीमल श्रीश्रीमाल चेरिटेबल ट्रस्ट, वडोदरा (जवरीलालजी श्रीश्रीमाल की पुण्यस्मृति में)

1000/- श्री विजयकुमारजी पंकजजी अथर्वजी बैद, चेन्नई/भीनासर (कमलादेवी एवं नवरत्नजी बैद की पुण्यस्मृति)

500/- शुभा दिनेशजी आंचलिया, इंदौर

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

5000/- श्री नरेंद्रजी देशलहरा, दुर्ग

5000/- गुप्तदान, उदयपुर

3100/- श्री विजयकुमारजी झमकलालजी टंच, बदनावर

श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता सहयोग

2000/- गुप्तदान, दुर्ग

श्रमणोपासक भेंट (सौजन्य से प्राप्त)

11000/- श्रीमती ताराबाई डोसी परिवार, डौण्डीलोहारा

5000/- श्री मोहनलालजी राजेशकुमारजी पींचा गंगाशहर/रांची (पिताजी श्री बालचंदजी एवं माताजी लाडदेवी पींचा की पुण्यस्मृति में)

3300/- श्री संपतलालजी सेठिया, गोलकगंज (भीखमचंदजी सेठिया, चोटादेवी सेठिया एवं ज्ञानादेवी सेठिया की पुण्यस्मृति में)

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री प्रतीकजी चत्तर, रावटी (नेमीचंदजी चत्तर की पुण्यस्मृति में), श्री अशोककुमारजी अक्षितकुमारजी जैन, बजरिया (चि. अक्षितकुमारजी के शुभविवाह पर), श्री पद्मचंदजी जैन, बजरिया (चि.अर्पित के शुभविवाह पर), श्री ललितकुमारजी आशीषकुमारजी जैन, श्यामपुरा (लाडुलाल जैन की पुण्यस्मृति में)

1050/- श्री झंवरलालजी सुनीतादेवी बरड़िया, कैलासर/भीनासर (सुश्री सोनम बरड़िया की सगाई अनिलजी बोथरा के संग होने के उपलक्ष में)

1000/- श्री राजेशजी मेहता, दुर्ग (हुकमचंदजी मेहता की पुण्यस्मृति में)

1000/- श्रीमती भंवरीदेवी सेठिया, उदासर/कोलकाता (गिरधारीमलजी सेठिया की पुण्यस्मृति में)

500/- श्री कैलाशचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर

जयश्री गोलछा संयम सेवा निधि (सौजन्य से प्राप्त)

100000/- श्री मिलापचंदजी ज्ञानचंदजी जैन, रायपुर

इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त)

500000/- श्री प्रवीणकुमारजी पटवा, हावड़ा

211000/- श्री महेंद्रकुमारजी पटवा, कोलकाता

150000/- श्री मानकचंदजी धूड़चंदजी डागा, बेंगलुरु

105000/- गुप्तदान, सूरत

100000/- श्री विमलजी कांकरिया, बेंगलुरु

51000/- श्री पारसमलजी दिनेशजी सुराना, बेंगलुरु

51000/- श्री चंपालालजी संजयकुमारजी बैद, कोलकाता
51000/- श्री पुखराजजी मुकिम, जयपुर
11111/- श्री महावीरजी पोखरना, मैसूर
11000/- श्री चंदनमलजी सुराना, रायपुर
11000/- श्री हस्तीमलजी पवनजी श्रीमाल, बेंगलुरु
11000/- श्री महावीरजी विशालजी रजतजी मेहता, बेंगलुरु
11000/- श्री रिखबचंदजी डोशी, डौण्डीलोहारा
11000/- श्री विवेकजी प्रकाशचंदजी कांकरिया, देवली
11000/- श्री अमरचंदजी रमेशचंदजी चौरड़िया, शहादा
10000/- श्री विजयकुमारजी संचेती, रायपुर
6000/- श्री मुकेशकुमारजी लाभचंदजी पोखरना, बेगूँ
5100/- श्री प्रदीपजी बरड़िया, बेंगलुरु
5100/- श्री मोहनलाल कांकरिया, नोखा
5000/- श्री मोहनलालजी पींचा, गंगाशहर
4100/- श्री हिम्मतलालजी मोगरा, उदयपुर
3000/- श्री सुशीलकुमारजी बोथरा, कोलकाता

2100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री निर्मलकुमारजी गांग, जावद, श्री अजीतजी चेलावत, जावद, श्री अमृतलालजी चौधरी, जावद, श्री विनोदजी राहुलजी डोशी, डौण्डीलोहारा, श्रीमती राधाबाई भंवरलालजी चौपड़ा, डोंगरगाँव, श्री हस्तीमलजी ऋषभजी समरा, कटुमनारकोइल

2000/- श्री ऋषभ संचेती, गुलाबबाग

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री सतीशकुमारजी डोशी, डौण्डीलोहारा, श्री डूंगरमलजी ओस्तवाल, कलंगपुर, श्री जितेंद्रजी जसराजजी झाबक, अकलकुँआ, जावद से- श्री सुंदरलालजी हीरालालजी कांठेड़, श्री महावीरजी पारसजी चौपड़ा, श्री सागरमलजी कांठेड़, श्री अनिलजी चेलावत, श्री अभिषेकजी चेलावत, श्री अक्षतजी चेलावत

1000/- श्री हनुमानमलजी गोलेच्छा, जलपाईगुड़ी
1000/- आशाजी समरा, कटुमनारकोइल
1000/- श्री प्रकाशचंदजी सांखला, राजनांदगाँव
555/- श्रीमती कमलाबाई पुखराजजी चौपड़ा, सेलम्बा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- जावद से- श्री पारसमलजी गांग, श्री जमनालालजी सुशीलजी बंबोरिया, श्री झमकलालजी चेलावत, रणजीतजी चौपड़ा

दानपेटी

25142/- श्री संजयकुमारजी वर्धमानजी चौपड़ा, रायपुर
15000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, धमतरी
11000/- श्री सिद्धार्थजी डागा, रायपुर
11000/- श्री उमेशकुमारजी मानजी सोनी, रायपुर
11000/- श्री सुशीलकुमारजी मूथा, रायपुर
8000/- श्री सुमितकुमारजी बुरड़, बेंगलुरु

5100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री हुक्मीचंदजी रिंकुजी पारख, राजिम, श्री प्रकाशजी राजेंद्रजी गिड़िया, राजिम, श्री हस्तीमलजी सांखला, डौण्डीलोहारा, श्री सुदर्शनकुमारजी सौरभजी आच्छा, रायपुर, श्री वीरेंद्रजी अजीतजी डागा, रायपुर, श्री चिरागकुमारजी प्रणवकुमारजी सुराना, रायपुर, श्री फूलचंदजी प्रतीकजी नाहटा, रायपुर, श्री इंद्रचंदजी जयकुमारजी सांखला, रायपुर

5090/- श्री डालचंदजी श्रेयांशजी बाफना, रायपुर
5005/- श्री त्रिलोकचंदजी अंशुलजी चौपड़ा, रायपुर
5000/- श्री उत्तमचंदजी संजयजी गिड़िया, रायपुर
5000/- श्री विकासजी श्रेयांशजी नाहटा, रायपुर
5000/- श्री समता महिला मंडल, अलिपुरद्वार
4200/- श्री संपतलालजी सेठिया, गोलकगंज
4100/- श्री भंवरलालजी चौपड़ा, डौण्डीलोहारा
4100/- श्री हेमकुमारजी प्रयत्नकुमारजी कोटड़िया, रायपुर
4100/- श्री शांतिलालजी मंगलमकुमारजी सांखला, रायपुर
4000/- श्री सुशीलकुमारजी सुराना, रायपुर
3500/- स्व. मिश्रीबाई गन्ना परिवार, बेंगलुरु

3100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री अशोकजी अंकुरजी रायसोनी, राजिम, श्री रिखबचंदजी डोशी डौण्डीलोहारा, श्री विनोदकुमारजी राहुलजी डोशी, डौण्डीलोहारा, श्री प्रेमराजजी हर्षजी कोटड़िया, रायपुर, श्री हिम्मतलालजी मोगरा, उदयपुर

2770/- श्री विवेकजी प्रकाशचंदजी कांकरिया, देवली
2700/- श्री छगनलालजी गन्ना, बेंगलुरु
2500/- श्री लीलमचंदजी वर्धमानजी कांकरिया, बेंगलुरु

2500/- गुप्तदान, दिल्ली
2261/- श्री अमितकुमारजी निशितजी मेहता, रायपुर
2200/- श्री राजेंद्रकुमारजी बैद, रायपुर
2200/- श्री गोरधनदासजी विमलचंदजी सुराना, दिल्ली
2100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री सुनीलकुमारजी नंदावत, बेंगलुरु, श्री बाबुलालजी मनोजकुमारजी सुराना, दिल्ली, श्री मोतीलालजी मनोजजी पारख परिवार, राजिम, श्री अमितजी भंसाली डौण्डीलोहारा, श्री अनूपचंदजी भंसाली, डौण्डीलोहारा, श्री प्रेमचंदजी भंसाली, डौण्डीलोहारा, श्री अनोपचंदजी डोशी, डौण्डीलोहारा, श्री उत्तमचंदजी सेठिया, रायपुर, श्री धर्मेंद्रजी कुशालजी सेठिया, रायपुर, श्री अमितकुमारजी हर्षितकुमारजी सेठिया, रायपुर, श्री अनिलकुमारजी ओस्तवाल रायपुर, श्री प्रेमचंदजी सुशीलकुमारजी कोटेचा, रायपुर, श्री यशकुमारजी अक्षतजी नाहटा, रायपुर, श्री कमलेश कुमारजी कुशालजी सांखला, रायपुर, श्रीमती कौशल्यादेवी सचिनजी नाहर, रायपुर, श्री मोतीलालजी ऋषभजी चौरड़िया, रायपुर, श्री राजेशजी युवराजजी चौपड़ा, रायपुर, श्री पुनमचंदजी सुरजादेवी बरड़िया, दिल्ली, श्री संजयकुमारजी हुलासमलजी हीरावत, दिल्ली
2000/- श्री हनुमानमलजी बोथरा, गोलकगंज
2000/- श्री पुनमचंदजी बोथरा, गोलकगंज
2000/- नीतूजी डागा, मुंबई
1651/- श्री शांतिलालजी यशवंतकुमारजी रांका, बेंगलुरु
1500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री दिलीपकुमारजी दक, बेंगलुरु, श्री नेमीचंदजी गन्ना, बेंगलुरु, श्री शौकीनलालजी चेलावत, जावद, श्री नंदकिशोरजी राहुलजी सुराना, रायपुर, श्री नरेंद्रजी भरतजी सुराना, रायपुर
1392/- श्री नवनीतजी कोटड़िया, रायपुर
1175/- श्री राजेशजी अक्षतजी भंसाली, रायपुर
1107/- श्री मुकेशकुमारजी अरिहंतजी संचेती, रायपुर
1106/- श्री महेंद्रजी लोकेशजी बुरड़, रायपुर
1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ऊषादेवी चौरड़िया, बेंगलुरु, स्व. श्री राजेंद्रजी वैभवजी रांका परिवार, बेंगलुरु, श्री कमलेश कुमारजी गांधी, बेंगलुरु, श्री देवराजजी दिलीपजी बोहरा, बेंगलुरु, श्री मूलचंदजी आदित्यजी भंसाली, बेंगलुरु, श्री माणकचंदजी मारू, बेंगलुरु, श्री पारसमलजी मांगीलालजी गांग, जावद, श्री विनोदकुमारजी मांगीलालजी गांग, जावद, श्री रामलालजी गुलाबचंदजी गांग, जावद, श्री मोहनलालजी राजेशकुमारजी पींचा, गंगाशहर/रांची, श्री पुखराजजी पारख, राजिम, श्री दीपकजी कामदार, राजिम, श्री गौतमजी सांखला, डौण्डीलोहारा, श्री नितिनजी डोशी, डौण्डीलोहारा, श्री राजकुमारजी चौपड़ा, रायपुर, श्री चंपालालजी विक्रमजी गुलेच्छा, रायपुर, श्री पानमलजी डागा, रायपुर, श्री नरेशकुमारजी ऋषिजी खटोर, रायपुर, श्री चंदनमलजी खुशीलजी सुराना, रायपुर, श्री लक्ष्मीलालजी नवरतनजी कोटड़िया, रायपुर, श्री प्रदीपकुमारजी सुराना, रायपुर, श्री जतिन भाई मेहता, रायपुर, श्री बिपिनचंदजी भूमिकाजी मेहता, रायपुर, श्री श्रेणिकजी क्रियांशजी मुणोत, रायपुर, श्री विपुलजी संवेदजी पींचा, रायपुर, श्री राजेंद्रजी उमेशजी सेठिया, रायपुर, श्री धर्मेंद्रकुमारजी धैर्याजी पारख, रायपुर, श्री अमरचंदजी रूपेशजी बैद, रायपुर, श्री रमेशचंदजी रितेशजी बागरेचा, रायपुर, श्री राजेंद्रजी अरिहंतजी बाफना, रायपुर, श्री कन्हैयालालजी लुणावत, रायपुर, श्री मनीषकुमारजी अनीशजी पींचा, रायपुर, श्री अमनकुमारजी आकाशकुमारजी बाफना, रायपुर, श्री अशोकजी सांखला, रायपुर, श्री विजयकुमारजी गौरवजी संचेती, रायपुर, श्री मोहनलालजी अभिषेकजी संचेती, रायपुर, श्री शुभकरणजी बोथरा, गोलकगंज, श्री विमलजी संचेती, दिल्ली, श्री नरेंद्रजी पारसमलजी सुराना, दिल्ली, श्री मनोजकुमारजी पींचा, दिल्ली, श्री रतनलालजी कन्हैयालालजी लुणिया, दिल्ली, श्री सुरेशजी प्रशांतजी चौपड़ा, रायपुर, श्रीमती इंद्रादेवी धाड़ीवाल, रायपुर, श्री जेठमलजी सांखला, रायपुर
1000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री कार्तिककुमारजी गांधी, बेंगलुरु, श्री उत्तमचंदजी मेहता, बेंगलुरु, श्री गणपतराजजी महेंद्रजी हेमंतजी मेहता, बेंगलुरु, डॉ. पी.एम. भंसाली बेंगलुरु, श्री गुलाबचंदजी कुशालचंदजी नाहटा, रायपुर, श्री पंकजजी धैर्यजी मेहता, रायपुर, श्री पूरणमलजी बोथरा, गोलकगंज, श्री धीरजकुमारजी सेठिया, गोलकगंज, श्री महावीरजी सुराना, दिल्ली, श्री अरुणकुमारजी रांका, दिल्ली, श्री नवरतनजी

हीरावत, दिल्ली, श्री रूपेशजी छाजेड़, रायपुर
900/- श्री सागरमलजी कांठेड़, जावद
800/- श्री संतोषजी राहुलजी बरड़िया, रायपुर
800/- श्री महेंद्रजी सौरभजी चौरड़िया, रायपुर
750/- श्री घेवरचंदजी अशोकजी गोलछा, रायपुर
750/- श्री महेंद्रकुमारजी प्रणयकुमारजी गोलछा, रायपुर
701/- श्री यतीशकुमारजी लक्ष्यजी बुरड़, रायपुर
700/- श्री टीकमचंदजी अशोकजी पारख, रायपुर
700/- श्री प्रकाशचंदजी राजेंद्रजी चौरड़िया, रायपुर
700/- श्री गुलाबजी सुनीलजी रायसोनी, सेमरा
700/- श्री हीरालालजी सोनावत, गोलकगंज
700/- श्री विनोदकुमारजी भूरा, दिल्ली
700/- श्री सुनीलकुमारजी बोथरा, दिल्ली
700/- श्री अशोककुमारजी हीरावत, दिल्ली
700/- श्री राजेंद्रजी पीयूषजी सुराना, रायपुर
510/- श्री रोड़ीलालजी सुंदरलालजी पितलिया, जावद
501/- श्री सुरेशकुमारजी जयंतजी बाफना, रायपुर
501/- श्री सुनीलकुमारजी कोठारी, रायपुर
501/- श्री मनोहरमलजी ऋषभजी सुराना, रायपुर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- श्री हरीशकुमारजी पिछोलिया, बेंगलुरु, श्री संग्रामसिंहजी सोनी, बेंगलुरु, श्री श्यामसुंदरजी मनोजजी नंदावत, बेंगलुरु, श्री महेंद्रकुमारजी मेहता, बेंगलुरु, श्री अशोककुमारजी सेठिया, बेंगलुरु, श्री सतीशकुमारजी दक, बेंगलुरु, श्री दिलीपकुमारजी अंकितजी चौपड़ा, जावद, श्री सम्पतलालजी गांग, जावद, श्री अशोककुमारजी गांग, जावद, श्री मांगीलालजी प्रकाशचंदजी बंबोरिया, जावद, श्री हस्तीमलजी चौपड़ा, जावद, श्री कन्हैयालालजी अभयकुमारजी पटवा, जावद, श्री जमनालालजी सुशीलजी बंबोरिया, जावद, श्री चांदमलजी चौपड़ा, जावद, श्री विजयकुमारजी गांधी, जावद, श्री अमृतलालजी चौधरी, जावद, गुप्तदान, जावद, श्री शांतिलालजी कांठेड़, जावद, श्री अमृतलालजी चौधरी, जावद, श्री भंवरलालजी विनोदकुमारजी बंबोरिया, जावद, श्री लूणकरणजी रजतजी भंसाली, डौण्डीलोहारा, श्री हजारीमलजी भंसाली, डौण्डीलोहारा, श्री जीतमलजी लोढ़ा, डौण्डीलोहारा, श्री रेखचंदजी प्रभाजी जैन, रायपुर, श्री पारसमलजी राहुलजी बच्छावत, रायपुर, श्री सपनकुमारजी बैदमूथा, रायपुर, श्री मनोहरजी भावेशजी भंसाली, रायपुर, श्री ओमप्रकाशजी ऋषिजी संचेती, रायपुर, श्री कन्हैयालालजी ललितकुमारजी बोथरा, रायपुर, श्री सुगनचंदजी कविशजी छाजेड़, रायपुर, श्री मनीषकुमारजी बरड़िया, रायपुर, श्री अनिलकुमारजी पलशकुमारजी बरड़िया, रायपुर, श्री योगेशजी राजेशजी पारख, रायपुर, श्री दानमलजी अंकुरजी कातरेला, रायपुर, श्री प्रवीणजी डाकलिया, रायपुर, श्री अशोककुमारजी देवचंदजी बुरड़, रायपुर, श्री धीरजजी गोलेच्छा, रायपुर, श्री टीकमचंदजी हर्षजी टाटिया, रायपुर, श्री हर्षद राय मेहता, रायपुर, श्री दिलीपकुमारजी प्रतीककुमारजी टाटिया, रायपुर, श्री अमरचंदजी बुरड़, रायपुर, श्री हुक्मचंदजी यशवंतजी चौपड़ा, रायपुर, श्री नरेशकुमारजी सौरभजी बाफना, रायपुर, श्री प्रखरकुमारजी छाजेड़, रायपुर, श्री लूणकरणजी राहुलजी पींचा, रायपुर, श्री विकासजी डाकलिया, रायपुर, श्री हितेशकुमारजी अजयजी रायसोनी, रायपुर, श्री त्रिलोकचंदजी बरड़िया, रायपुर, श्री घेवरचंदजी अमरचंदजी बेगानी, रायपुर, श्री भंवरलालजी अशोकजी चौपड़ा, रायपुर, श्री प्रमोदजी अमनजी रायसोनी, रायपुर, श्री चेतनकुमारजी श्रेयांशजी रायसोनी, रायपुर, श्री हितेशजी ओस्तवाल, रायपुर, श्री विनोदकुमारजी ऋषभजी रायसोनी, सेमरा, चंचलदेवी विकासजी रायसोनी, सेमरा, श्री धनराजजी सुशीलकुमारजी दुगड़, रायपुर, श्री पूरणलालजी पीयूषजी बाफना, रायपुर, श्री महेंद्रजी सोनावत, गोलकगंज, श्री नथमलजी सोनावत, गोलकगंज, गुप्तदान, कोलकाता, श्री गोपालचंदजी सांड, दिल्ली, श्री गौतमकुमारजी हीरावत, दिल्ली, श्री शुभकरणजी सेठिया, दिल्ली, श्री यशजी गोलच्छा, रायपुर, श्री सुरेशचंदजी लोकेशजी सांखला, रायपुर, सूरजकँवर झाम्बड़, रायपुर

सदस्यता सहयोग (महिला समिति)

भिलाई से 11000/- संतोषजी, **खरियार रोड** से 10000/- संतोषजी, 1000/- ज्योतिजी, **रायपुर** से 5000/- नम्रताजी, 2000/- मनोरमाजी, 1250/- वंदनाजी, 1000/- ऊषाजी, 1000/- अनिताजी, 500/- सुषमाजी, **दुर्ग** से 2000/- चंदाजी,

1000/- मोनालीजी, 1000/- वीनाजी, 1000/- बबलीजी, **राजनांदगाँव** से 2000/- गुप्तदान, **बेरला** से 500/- अनिताजी, 500/- चांदनीजी

5000/- समता महिला मंडल हैदराबाद

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

21000/- बिमलकुमारजी संचेती, विशाखापट्टनम्

11000/- शुभकरणजी ऋषभजी यशजी संचेती, गुलाबगढ़ (मनोजजी संचेती की पुण्यस्मृति में)

समता युवा संघ

75000/- छाऊदेवी दूल्हराज रांका फाउंडेशन, जयनगर/मुंबई (कैलेंडर हेतु सहयोग)

विशेष :

साहित्य आजीवन सदस्य-3, श्रमणोपासक सदस्य-3, संघ साधारण सदस्य-1, स्तम्भ सदस्य (युवा संघ)-2, महिला समिति आजीवन सदस्य-171

01 अप्रैल 2023 से 30 अप्रैल 2023 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/-	UPI विपुल जैन
12.04.23	10100/-	UPI नेहा जैन
20.04.23	5000/-	UPI अशोक कुमार बृज
22.04.23	1101/-	UPI सिंपल जैन

उपरोक्त भेंट दाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

॥ जय महावीर ॥

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा भाग 1 से 12 तक आयोजित होगी, जिसमें सकल जैन समाज के सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते हैं।

(भाग 1 से 4 भाग तक)

12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं 55 वर्ष से ऊपर जो लिखने में असमर्थ हो उनके लिए ओरल परीक्षा होगी।

Exam date 01 Oct. 2023

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करवें।

अधिक जानकारी के लिए इस मोबाइल नंबर पर सम्पर्क कर सकते हैं :-

☎ 7231933008

विनम्र श्रद्धांजलि

निम्बाहेड़ा। सुश्रावक रत्नेशकुमारजी सुपुत्र सागरमलजी सहलोत (मूल निवासी निकुंभ) का 57 वर्ष की आयु में 27 मार्च को देहावसान हो गया। आप सरल एवं धार्मिक प्रवृत्ति के धनी थे। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति समर्पित रहते हुए आप चारित्रात्माओं की सेवा में तत्पर रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।

खरवा। सुश्राविका चंचलकँवरजी धर्मपत्नी नरेन्द्रपालजी पदावत का 25 अप्रैल को 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अगाध श्रद्धा एवं समर्पणा थी। धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप में आप सदैव अग्रणी रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

नोखा। सुश्राविका सोनीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी पींचा का 3 मई को 95 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप नित्य सामायिक एवं स्वाध्याय करती थी। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आप अटूट आस्थावान थी। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते हुए सुपात्र दान की भावना से ओत-प्रोत थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

बम्बोरा। सुश्रावक रतनलालजी कदमालिया का 3 मई को 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धावान थे एवं चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहते थे। आपके प्रतिदिन 5 सामायिक, पोरसी, रात्रि चौविहार, जमीकंद त्याग, द्रव्य की मर्यादा, विगय का त्याग सहित कई त्याग-प्रत्याख्यान का लक्ष्य रहता था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गये हैं।

जलगाँव। सुश्राविका लीलाबाई धर्मपत्नी जतनलालजी सुराणा का 15 मई को निधन हो गया। आपकी देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्ण समर्पणा थी। आप साध्वी श्री ज्ञानकँवरजी म.सा. एवं साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. की संसारपक्षीय भांजी थी। धर्म-ध्यान, त्याग-तप का लक्ष्य रखते हुए हमेशा साधु-साध्वीवृंद की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

शुभ अध्यवसाय से होती है सम्यक्त्व की प्राप्ति

आत्मबोध जगाने में मुख्य कारण उपशम-क्षयोपशम भाव है किन्तु यह भी सत्य है कि पुण्य का उदय होगा तो आत्मबोध जगने की बात होगी। भले ही पाप कर्म का उदय नहीं है, किंतु जब तक पुण्य का भाव साथ में नहीं होगा, तब तक आत्मबोध जगना मुश्किल है। सम्यक्त्व की प्राप्ति शुभ अध्यवसाय में ही होती है। शुभ अध्यवसाय पुण्यकारक होते हैं, इसलिए सम्यक्त्व की प्राप्ति में पुण्य सहायक होता है। यदि पुण्य का योग न हो तो कितना भी प्रयत्न कर लें आत्मबोध पैदा नहीं होगा। यह सोचने की बात है कि आत्मबोध को प्राप्त करने के लिए हम कितना प्रयत्न कर रहे हैं।

(महकती झीलें)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

युवती शक्ति

'रामगुरु का शुभ संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. निरंतर संघ, समाज और सम्पूर्ण देश को व्यसनमुक्त बनाने की पुरजोर प्रेरणा दे रहे हैं।

'जिधर हो गुरु का इशारा, उधर बढ़े कदम हमारा' इस पंक्ति को चरितार्थ करते हुए युवती शक्ति मंच के द्वारा **'व्यसनमुक्त भारत'** Fill it with your Creativity गतिविधि आयोजित की गयी।

Digital Flyers, Influencing Videos और Handmade Poster बनवाकर उसे गूगल फॉर्म द्वारा मंगवाया गया। इस गतिविधि में 83 युवतियों ने भाग लिया। अपनी सृजनात्मकता का परिचय दिया। **टॉप 3 अंचलों (पूर्वोत्तर, मालवा, मुंबई-गुजरात)** और **टॉप 3 क्षेत्रों (मुम्बई, बेंगलुरु, सूरत)** से सबसे ज्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया।

महत्तम महोत्सव के अंतर्गत सामाजिक प्रवृत्ति का प्रकल्प **व्यसनमुक्ति अभियान सप्ताह** में 31 मई को युवतियों ने चित्रकला प्रतियोगिता से अपनी कला का परिचय दिया। जनजागरण रैली में बैनर्स और स्लोगन द्वारा **No Tobacco Day** मनाया गया।

विशेष अनुग्रह

सम्पूर्ण देश में स्थानीय संयोजिकाओं एवं युवतियों को **'युवती शक्ति'** से जोड़ा जा रहा है, ताकि वे संघ में अपना योगदान देते हुए स्वयं की प्रतिभा को निखार सकें। सभी अभिभावकों से करबद्ध निवेदन है कि युवतियों को अध्ययन एवं अन्य गतिविधियों के साथ-साथ **'युवती शक्ति'** से जुड़ने हेतु प्रेरणा देवें।

जुड़ जाए युवती हर एक, तो शक्ति गजब बन जाएगी।
थोड़ी-सी प्रेरणा थोड़ा-सा पुरुषार्थ, एक क्रांति ले आएगी।।

सामाजिक कार्य

मई माह में विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित सामाजिक कार्य

बीकानेर-मारवाड़ अंचल

देशनोक : दिनांक 27 मई, 2023 को मुमुक्षु बहन लक्की जी सुराणा की दीक्षा के उपलक्ष में महिला मंडल द्वारा 35 क्विंटल हरा चारा व गुड़ गायों को खिलाया गया।

जोधपुर : जरूरतमंद सर्वधर्मियों को 50,000/- रुपये की राशि का भोजन वितरण किया गया।

छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल

नगरी : 'मूक बधिर स्कूल' में स्टेशनरी, कॉपी, पेन वितरित किये गये एवं बच्चों को नाश्ता करवाया गया।

मई माह में सम्पन्न शिविर

मई माह में श्री अ.भा.सा. जैन महिला सामिति द्वारा अनेकों क्षेत्रों में सम्पन्न विभिन्न शिविर एवं कार्यक्रम निम्न प्रकार से दिए जा रहे हैं-

क्र.	विषय	क्षेत्र	क्र.	विषय	क्षेत्र
1.	स्व आत्मा की पहचान	बेंगलुरु	9.	संस्कार शिविर	मुम्बई
2.	नमिराजर्षि एवं इंद्र का आध्यात्मिक रोचक संवाद	बेंगलुरु	10.	यतना	अहमदाबाद
3.	पुद्गल परावर्तन	बेंगलुरु	11.	आध्यात्मिक साधना कैसी हो ?	देशनोक
4.	साधु के 52 अनाचार	बेंगलुरु	12.	सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	जोधपुर
5.	मोक्ष जाने का शॉर्टकट : अष्ट प्रवचन माता	बेंगलुरु	13.	25 क्रियाएं व उववाई सूत्र	जोधपुर
6.	यतनामय जीवन जीने का रहस्य	बेंगलुरु	14.	समता संस्कार शिविर	केसिंगा
7.	संघ समर्पण शिविर	बेंगलुरु	15.	जीवन निर्माण एवं संस्कार शिविर	नगरी
8.	ज्ञान ज्योति शिविर	बेंगलुरु	16.	ग्रीष्मकालीन शिविर	जलगाँव
			17.	समता संस्कार शिविर	जलगाँव
			18.	समता संस्कार शिविर	रायपुर

प्रतिक्रमण प्रतियोगिता* इच्छामि खमासमणो तक

दिनांक 01 अप्रैल से 15 मई तक आयोजित **प्रतिक्रमण प्रतियोगिता** (इच्छामि खमासमणो तक) में अंचलवार प्रतिभागियों की संख्या इस प्रकार है-

क्र.	अंचल	प्रतिभागियों की संख्या	क्र.	अंचल	प्रतिभागियों की संख्या
1.	मेवाड़	109	7.	तमिलनाडु	11
2.	बीकानेर-मारवाड़	73	8.	मुंबई-गुजरात + अंतरराष्ट्रीय	232
3.	जयपुर-ब्यावर	125	9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	427
4.	मालवा	170	10.	बंगाल-बिहार	27
5.	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	396	11.	पूर्वोत्तर	25
6.	कर्नाटक-आंध्रप्रदेश	3	12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा	3
Helpline No. 9752289969, 8149465041				**कुल**	**1601**

* प्रतिक्रमण प्रतियोगिता के आगामी चरणों का विवरण श्रमणोपासक के 29-30 मई 2023 के अंक में प्रकाशित किया जा चुका है।

मुमुक्षु बहिन के करकमलों से हुआ 'झीलों की लोरी' का विमोचन

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के श्रीमुख से उदयपुर चातुर्मास के अवसर पर फरमाये गये प्रवचनों पर आधारित नवीन साहित्य **'झीलों की लोरी'** (श्री रामउवाच-31) का विमोचन 31 मई 2023 को झालामन्ना की नगरी बड़ीसादड़ी में मुमुक्षु बहिन लक्कीजी सुराणा के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

मुमुक्षु अभिनन्दन समारोह के अवसर पर सम्पन्न इस विमोचन कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय महामंत्रीजी, संघ शिखर सदस्य, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, अनेक वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों सहित वीर परिवार के सदस्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ायी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साहित्य संयोजक ने बताया कि इस पुस्तक में समाहित आचार्य श्री रामेश के प्रवचन मन को शांत करने, मन में धर्म जगाने, सदाचार, निडरता एवं निर्भीकता के संस्कार प्रस्फुटित करने हेतु धार्मिक खाद्य रूप हैं।

-साहित्य संयोजक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल प्रवास

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा 10-11 जून 2023 को मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल में वापी, वलसाड, चिखली, नवसारी, बारडोली, सूरत, वडोदरा व अहमदाबाद आदि क्षेत्रों में प्रवास किया गया। प्रवास के दौरान मार्गवर्ती क्षेत्रों में शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले) आदि ठाणा-8 के दर्शन-वंदन एवं मार्गदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सभी प्रवास स्थलों पर सभाओं का शुभारंभ नवकार महामंत्र के सामूहिक जाप से किया गया। सभाओं में समता शाखा, उत्क्रांति, महत्तम महोत्सव, तरुणशक्ति, धार्मिक प्रतियोगिताओं, सामाजिक कार्यक्रम, व्यसनमुक्ति व संगठन की मजबूती सहित समता युवा संघ द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई। इस दौरान राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा चिखली में नवीन शाखा का गठन एवं नवसारी में नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन किया गया। प्रवासी दल की प्रेरणा से दल के वाहन चालक ने व्यसनमुक्ति का संकल्प ग्रहण कर गुरुदेव का आह्वान अपनाया।

प्रवास में तरुण शक्ति के तहत् तरुण युवा साथियों को संघ से जोड़ने के लिए चल रही मुहीम 'Bring Another You' एवं ज्ञानार्जन में "ALL IS WELL" में युवाओं को प्रतिक्रमण कंठस्थ करने हेतु विशेष प्रभावना की गयी। महत्तम महोत्सव के प्रकल्प प्रतिक्रमण याद करने हेतु 25 फॉर्म भरे गये। सभी स्थानों पर प्रवासी दल का आत्मीय स्वागत किया गया एवं युवा साथियों ने संघ विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया। राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

-राष्ट्रीय मंत्री

अमृतम् जलम् में बही अमृतधारा

- 3 अप्रैल को भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर करजू एवं हैदराबाद में समता जलसेवा प्रारंभ की गयी।
- 5 अप्रैल को भाटापारा में अमृत तुल्य शीतल जलसेवा का शुभारंभ किया गया।
- 5 अप्रैल को अहमदाबाद के एल.जी. म्युनिसिपल हॉस्पिटल एवं मणिनगर में तथा 23 अप्रैल को गीता मन्दिर एस.टी. बस स्टैण्ड पर ठण्डे पानी की प्याऊ का शुभारंभ कर फल वितरित किये गये।
- 11 जून को नोखा में रेलवे स्टेशन पर समता जल मंदिर का शुभारंभ किया गया तथा 6 ट्रेनों में यात्रियों को नीम्बू की शिकंजी एवं शीतल जलसेवा प्रदान की गयी।

उत्क्रांति विवाह और कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रान्ति की आभा सर्वत्र फैल रही है। अनेक परिवार, संघ और ग्राम आचार्य भगवन् के इंगित इशारों को शिरोधार्य करते हुए उत्क्रांति नियमों से अपना जीवन सजा रहे हैं। समाजजन उत्क्रांति नियमों को ग्रहण कर पूर्ण मनोयोग से उनकी पालना भी कर रहे हैं। आप सभी निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं। ऐसे ही परिवारों में माह मई 2023 में उत्क्रांति नियमों से सम्पन्न मांगलिक कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है-

1. देशनोक निवासी, गंगाशहर प्रवासी उमेशजी सुराणा के सुपुत्र श्रीकांत का मंगल परिणयोत्सव हीरालालजी आंचलिया की सुपुत्री झंकार के साथ 2 मई को सम्पन्न हुआ।
2. अलाय निवासी सूरजमलजी चौरड़िया की सुपुत्री समता का मंगल परिणयोत्सव ताराचंदजी कोचर के सुपुत्र दर्शिल के साथ 21 मई को सम्पन्न हुआ।
3. रायपुर निवासी गौतमचंदजी चौरड़िया की सुपुत्री भाग्यश्री का मंगल परिणयोत्सव धमधा निवासी ज्ञानचंदजी पारख के सुपुत्र आकाश के साथ 21 मई को सम्पन्न हुआ।
4. देशनोक निवासी शांतिलालजी मुन्नीलाल जी सांड का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 22 मई को सम्पन्न हुआ।
5. देशनोक निवासी विमलकुमारजी तेजकरणजी भूरा का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 22 मई को सम्पन्न हुआ।
6. देशनोक निवासी शान्तिलालजी सांड के सुपुत्र महेन्द्र की सगाई डूंगरमलजी सेठिया की सुपुत्री मोनिका के साथ 22 मई को सम्पन्न हुई।
7. मैसूर निवासी प्रकाशचंदजी श्यामलालजी गौतमकुमारजी दिलीपकुमारजी गन्ना का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 22 मई को सम्पन्न हुआ।
8. मैसूर निवासी दिलखुश कुमारजी विनोद कुमारजी डूंगरवाल का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 22 मई को सम्पन्न हुआ।
9. होलेनरसीपुर निवासी महावीर कुमारजी आशीष कुमारजी कोठारी का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 22 मई को सम्पन्न हुआ।
10. देशनोक निवासी शान्तिलालजी बुच्चा के सुपुत्र मुकेश की सगाई चम्पालालजी आंचलिया की सुपुत्री रेखा के साथ 24 मई को सम्पन्न हुई।
11. चित्तौड़गढ़ निवासी महावीर कुमारजी बोरदिया के सुपुत्र हिमांशु का मंगल परिणयोत्सव सुनीलजी नाहर की सुपुत्री चारुल के साथ 29 मई को सम्पन्न हुआ।

आपके क्षेत्र में भी कोई आयोजन उत्क्रांति के अनुसार होता है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य भिजवाएँ। यह जानकारी साधुमार्गी संघ की सभी पत्रिकाओं में प्रकाशित की जायेगी। उत्क्रांति से सम्बंधित किसी भी प्रकार की शंका आपके मन में हो तो नि:संकोच आप अपने सवाल हमें भेज सकते हैं। हम आपकी जिज्ञासाओं का समाधान जल्द ही करने का प्रयास करेंगे।

उत्क्रांति - राष्ट्रीय संयोजक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (मई माह)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	07–05	14–05	21–05	28–05
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1543	1336	1549	1510
		आंचलिक क्षेत्र	94	95	94	93
2	बीकानेर–मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	802	801	960	668
		आंचलिक क्षेत्र	48	48	45	47
3	जयपुर–ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	371	373	323	241
		आंचलिक क्षेत्र	23	23	22	22
4	मालवा	आंचलिक उपस्थिति	1344	948	776	750
		आंचलिक क्षेत्र	76	73	75	70
5	छत्तीसगढ़–उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	2313	1967	1641	1904
		आंचलिक क्षेत्र	163	164	160	160
6	कर्नाटक–तेलंगाना–आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	381	348	364	479
		आंचलिक क्षेत्र	28	26	28	28
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	317	215	214	247
		आंचलिक क्षेत्र	14	13	13	14
8	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई	आंचलिक उपस्थिति	394	357	311	383
		आंचलिक क्षेत्र	26	25	23	25
9	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	494	501	547	392
		आंचलिक क्षेत्र	54	55	51	50
10	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखण्ड–आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	278	275	304	294
		आंचलिक क्षेत्र	32	30	31	28
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	220	221	216	192
		आंचलिक क्षेत्र	22	22	21	22
12	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–यू.पी.	आंचलिक उपस्थिति	52	65	54	52
		आंचलिक क्षेत्र	6	7	7	7
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	14	15	8	14
		आंचलिक क्षेत्र	6	7	4	6
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		8523	7422	7267	7126
	कुल क्षेत्र		592	588	574	572

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज़ करवाने वाले संघों की सूची (मासिक)

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	रायपुर	849	6.	बेंगलुरु	551
2.	दुर्ग	765	7.	गंगाशहर–भीनासर	548
3.	कानोड़ (उत्क्रांति ग्राम)	687	8.	सूरत	489
4.	रतलाम	570	9.	चेन्नई	466
5.	उदयपुर	560	10.	नोखामंडी	449

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की नेश्राय में सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची

दिनांक : 16-06-2023

01. मेवाड़ अंचल

क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नम्बर	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नम्बर
1	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.**	6	जैन स्थानक भवन, जूना बाजार, स्थानक गली, छोटीसादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)	लक्ष्मीलालजी कोठारी 9887797063 श्रेणिकजी नाहर 8058550350 महेशजी नाहटा 9406201351 7977370892	2	शासन दीपक श्री हेमन्तमुनिजी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, करजालिया, भीलवाड़ा (राज.)	धनपतजी नाहर 9414262235 8619228386 हस्तिमलजी मेड़तवाल 9828572060
3	शासन दीपक श्री शोभनमुनिजी म.सा.	3	कैलाशजी आगाला का फार्म, सुरजना अचोदा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मनीषजी भड़कत्या 9950478161 आदित्येन्द्रजी सेठिया 9829244305	4	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले)	5	जुहार जैन भवन, भूपालपूरा, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495
5	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	7	समता भवन, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रकाशजी मेहता 9414619476 नरेन्द्रजी रांका 9829269761	6	शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा.	8	उदय पब्लिक स्कूल, धामनिया, प्रतापगढ़ (राज.)	रामप्रसादजी शर्मा 7742013228
7	शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा.	7	समता भवन, काशीपुरी, भीलवाड़ा (राज.)	विद्यासागरजी सुराणा 9462595676 पूनमचंदजी भूरा 9414115164	8	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतनश्रीजी म.सा.	4	गुलाब भवन, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलालजी पोरवाल 9461273789 सुशीलकुमार जी नागौरी 9799999595
9	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा.	4	अशोकजी जैन का निवास, कीर की चौकी, उदयपुर (राज.)	मनीषजी पोखरना 9929805901 8947006584 अशोकजी जैन 9829674383	10	शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा.	7	आशीषजी पोरवाल का निवास, नाकोड़ा नगर, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	आशीषजी पोरवाल 9950645601
11	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (देशनोक वाले)	7	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेशजी कुदाल 9414683309 तखतमलजी लसोड़ 9166663441	12	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा.	3	शनि मंदिर में, देवली, चित्तौड़गढ़ (राज.)	किशनजी गायरी 9588224168
13	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा.	12	कोठारी भवन, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	14	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा.	7	आनंदयश सामायिक भवन, डूंगला, चित्तौड़गढ़ (राज.)	धनराजजी नागौरी 9413045964 अरविंदजी नागौरी 9413045963
15	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुन्दरीश्रीजी म.सा.	3	प्रकाशजी जैन का निवास, अनंत विहार, मादड़ी, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	16	शासन दीपिका साध्वी साध्वी श्री मधुबालाश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, भीण्डर, उदयपुर (राज.)	प्रकाशजी कुदाल 9829280129 8079095851 रोशनलालजी वया 9460726958

17	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावतीश्रीजी म.सा.	3	सी–22, जयश्रीजी कुंदल का निवास, गली नम्बर–12, बापू नगर, सेंती, चित्तौड़गढ़ (राज.)	आदित्येन्द्रजी सेठिया 9829244305 बसंतीलालजी चंडालिया 9829833198 जयश्रीजी कुंदल 9460075550	18	शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा.	12	बक्सीजी धर्मशाला (आराधना भवन), छोटीसादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)	लक्ष्मीलालजी कोठारी, छोटीसादड़ी 9887797063
19	शासन दीपिका साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा.	4	निर्मलजी भण्डारी का निवास, सुभाष नगर, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	20	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, निकुम्भ, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कमलेशजी धींग 9829247251
21	शासन दीपिका साध्वी श्री राजुलश्रीजी म.सा.	3	बक्सीजी धर्मशाला (आराधना भवन), छोटीसादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)	लक्ष्मीलालजी कोठारी 9887797063	22	शासन दीपिका साध्वी श्री खंतीप्रियाश्रीजी म.सा.	5	महावीर भवन, केसुन्दा, प्रतापगढ़ (राज.)	दिनेशजी गांधी 9001385354 प्रवेशजी कोठारी 8769954386
02. बीकानेर-मारवाड़ अंचल									
1	शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा.	11	सेठिया कोटड़ी, कंसेरा बाजार के पास, मरोठी मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	कन्हैयालाल जी बैद 9166211111 राजेन्द्रकुमार जी गोलछा 9571840310	2	शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा.	3	आध्यात्मिक आरोग्यम, पुरानी लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
3	शासन दीपक श्री राकेशमुनिजी म.सा.	2	जवाहर विद्यापीठ भवन, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	4	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाजी म.सा.	11	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगडी चौक, बीकानेर (राज.)	कन्हैयालाल जी बैद 9166211111 राजेन्द्रकुमार जी गोलछा 9571840310
5	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवरजी म.सा.	4	समता भवन केन्द्रीय कार्यालय, जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	6	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा.	4	श्री जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	विकासजी सुराणा 7737570263
7	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभाश्रीजी म.सा.	5	जैन स्थानक भवन, अजित, बाड़मेर (राज.)	कमलेशजी भंसाली 7726812328	8	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा.	3	ललितजी कूकड़ा का निवास, टैगोर नगर, पाली (राज.)	ललितजी कूकड़ा 6375127390
9	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेताश्रीजी म.सा.	5	बोथरा निवास, सुराणा मोहल्ला, नई लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	10	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाश्रीजी म.सा.	3	डागा निवास, पुरानी लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
11	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभाश्रीजी म.सा.	5	राजेन्द्रजी सांखला का निवास, अमर नगर, जोधपुर (राज.)	अरुणजी चौपड़ा 9828426000	12	शासन दीपिका साध्वी श्री विकासश्रीजी म.सा.	9	कांकरिया भवन, पावटा सी रोड, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008
13	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (राज.)	पूनमचंदजी सुराणा 9351092281	14	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा.	4	जगदीशजी माली का निवास, महेशनगर, बाड़मेर (राज.)	जगदीशजी माली 6375210642

15	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा.	3	कांकरिया भवन, कांकरिया चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	विकासजी सुराणा 7737570263	16	शासन दीपिका साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा.	4	बांठिया भवन, पोस्ट ऑफिस के पास, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
03. जयपुर-ब्यावर अंचल									
1	पर्यायज्येष्ठ श्री नरेन्द्रमुनिजी म.सा.	6	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंदजी रांका 9414008974 उत्तमचंदजी लोढ़ा 9352772577	2	शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा.	3	पोरवाल भवन, आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर (राज.)	पद्मजी जैन 9667006756
3	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभमुनिजी म.सा.	3	मालियों की ढाणी, किशनगढ़ शहर, अजमेर (राज.)	कमलेशजी चौपड़ा 9828210721	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवरजी म.सा.	9	कांकरिया डेलान, नयाबास ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंदजी रांका 9414008974 उत्तमचंदजी लोढ़ा 9352772577
5	शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा.	6	समता भवन, महारानी फार्म, गायत्री नगर, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंदजी मूथा 9414054971 अभयजी नाहर 9829165897 मुकेशजी जारोली 9351149600	6	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. (कानोड़ वाले)	3	समता भवन, गुरुद्वारा रोड, सवाईमाधोपुर (राज.)	ऋषभजी जैन 9660605252 पद्मजी जैन 9667006756
7	शासन दीपिका साध्वी श्री परागश्रीजी म.सा.	5	115, सामायिक स्वाध्याय भवन, कृष्णा सागर, राधा निकुंज, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंदजी मूथा 9414054971 अभयजी नाहर 9829165897 मुकेशजी जारोली 9351149600	8	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वीश्रीजी म.सा.	4	शांति भवन, ओसवाल मोहल्ला, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर (राज.)	धर्मेन्द्रजी चौपड़ा 9828210721
9	शासन दीपिका साध्वी श्री अनाकारश्रीजी म.सा.	4	सुराणा बिल्डिंग, जवाजा, अजमेर (राज.)	पद्मजी नाबरिया 7877799777 अंकितजी रूणवाल 9799202711					
04. मालवा अंचल									
1	शासन दीपक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, भक्त प्रहलाद नगर इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200	2	शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा.	2	बालाजी मंदिर परिसर, चद्दर शेड, रूपनगर फांटा, रतलाम (म.प्र.)	शंकरलालजी राठौर 9907580911 अभयकुमारजी भण्डारी 8989605240 मनीषजी पोखरना 9893482863
3	शासन दीपक श्री मनीषमुनिजी म.सा.	2	1/2, विनयचन्द जी कांठेड़ का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शौकिनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345	4	शासन दीपक श्री उदितमुनिजी म.सा.	3	समता भवन, नौलाईपुरा, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717

5	शासन दीपक श्री निर्वाणमुनिजी म.सा.	2	पारसमलजी बोहरा का कोटेज, सेजावता फांटा, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717 ललितजी कटारिया 9407151009	6	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूरकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. (पिपलियामण्डी)	8	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली नं. 2, नई आबादी, मन्दसौर (म.प्र.)	बाबूलालजी पितलिया 9425369562 नरेन्द्रकुमारजी चौधरी 9425369547
7	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (महा. वाले)	3	समता भवन, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शौकिनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345	8	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुन्तलाश्रीजी म.सा.	5	अरुणजी पितलिया का निवास, जैन कॉलोनी, महलवाड़ा, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717
9	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (बीकानेर वाले)	5	राजकुमारजी भण्डारी का निवास, गौतम नगर, कालाखेत, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलालजी पितलिया 9425369562 नरेन्द्रकुमारजी चौधरी 9425369547	10	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांताश्रीजी म.सा.	15	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200
11	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म.सा. (जावरा)	4	पर्श्वनाथ विहार धाम, हर्कियाखाला सांदा, नीमच (म.प्र.)	अनिलजी पोरवाल 8103369449 कमलेशजी नागौरी 8815305253 7610677253	12	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणाश्रीजी म.सा.	4	समता भवन, खाचरौद, उज्जैन (म.प्र.)	अनिलजी चौरड़िया 9826093151
13	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म.सा.	9	समता सदन, घांस बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	14	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.सा.	4	नाकोड़ा किराणा स्टोर – टेंट, खिलेड़ी, धार (म.प्र.)	राकेशजी जैन 9977515279
15	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबालाश्रीजी म.सा.	4	समता भवन, जवाहरपथ, जावरा, रतलाम (म.प्र.)	अभयकुमारजी भण्डारी 8989605240 मनीषजी पोखरना 9893482863	16	शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणाश्रीजी म.सा.	4	वर्धमान जैन स्थानक भवन, अफजलपुर, मंदसौर (म.प्र.)	विमलजी भण्डारी 9981570251
17	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पनाश्रीजी म.सा.	3	विनोदजी जैन का निवास, सादलपुर, धार (म.प्र.)	विनोदजी जैन 9630670111	18	शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा.	3	अग्रवाल भवन, कुंडेश्वर, गली न. 02, खण्डवा (म.प्र.)	राजकुमारजी जैन 9826028183
19	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभाश्रीजी म.सा.	3	21, अभिषेकजी कांठेड़ का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शौकिनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345	20	शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा.	4	शांतिलालजी कांठेड़ का निवास, टीचर्स कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शौकिनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345
21	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा.	3	महावीर वेयर हाऊस, कनावटी, नीमच (म.प्र.)	अभिषेकजी कांठेड़ 8770482540 9425924080	22	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्माश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, पाडल्या, खंडवा (म.प्र.)	माणकचंदजी जैन 9754507700
23	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्यश्रीजी म.सा.	3	मानव सेवा समिति, रामसहाय मार्ग, नागदा ज., उज्जैन (म.प्र.)	चन्दनमलजी संघवी 9827857444	24	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागतश्रीजी म.सा.	3	शांतिलालजी कांठेड़ का निवास, टीचर्स कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शौकिनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345

05. छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा.	2	निसर्ग भवन, कोमना, नुवापाड़ा (उड़ीसा)	गणेशजी जैन 9938535195	2	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शनमुनिजी म.सा.	2	जवरीलालजी सुराना का निवास, धरमपुरा बालाजी मंदिर के पास, जगदलपुर (छ.ग.)	मनोजजी चौरड़िया 9425266067 खेतमलजी बुरड़ 7987608822 विनोदजी पारख 9424285009
3	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.	5	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	राजेन्द्रजी श्रीश्रीमाल 9300330075 प्रदीपजी बोथरा 9424119340	4	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (भीनासर वाले)	5	समता भवन, संजय नगर, बालोद (छ.ग.)	प्रदीपजी चौपड़ा 9425562310
5	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा.	3	प्रवीणजी बागलेचा का निवास, भानुप्रतापपुर, कांकेर (छ.ग.)	प्रवीणजी बागलेचा 9406093599	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीलाश्रीजी म.सा.	3	अशोकजी चौपड़ा का निवास, घोटगाँव, धमतरी (छ.ग.)	अशोकजी चौपड़ा 9977826000
7	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीलाश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	3	सिसोदियाजी (जैन) का निवास, देवरी बंगला, बालोद (छ.ग.)	मदनलालजी पारख 9425240291 9770352550					
06. कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री विदेहमुनिजी म.सा.	2	दामोदरजी शर्मा का निवास, कवाड़ीगुड़ा (हैबीटेड इलाइट के पास), हैदराबाद (तेलंगाना)	महेन्द्रजी बैद 9550667275 जिनेशजी सांखला 9912765554	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभाश्रीजी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, कम्पली, कोप्पल (कर्ना.)	राकेशजी बागरेचा 9448341470
3	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, कुकनूर, कोप्पल (कर्ना.)	सुभाषजी तालेड़ा 9440440478	4	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा.	7	ग्राउंड फ्लोर, फ्लैट नंबर 01, पार्क वेस्ट ओ.सी. विंग, बेंगलुरु (कर्ना.)	शशांकजी गिड़िया 8861639893 हितेशजी बोहरा 9845702525
08. मुम्बई-गुजरात-अंचल									
1	शासन दीपक श्री निश्चलमुनिजी म.सा.	3	समता भवन, गंगावाड़ी के पास, घाटकोपर वेस्ट, मुम्बई (महा.)	हेमंतजी पितलिया 8454061008 सोहनजी पितलिया 9594887505	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	8	समता भवन, विजय नगर, अहमदाबाद (गुज.)	अशोकजी शाह 9998464663 मोहनजी बोथरा 9825581229
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभाश्रीजी म.सा.	4	तेरापंथ भवन, डूंगरी, नवसारी (गुज.)	कमलेशजी जैन 9638420087	4	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभाश्रीजी म.सा.	3	बाड़मेर भवन, मॉडल टाउन, पर्वत पाटिया, सूरत (गुज.)	हुलासजी सुराणा 9825198522 प्रेमजी पारख 9426865679
09. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री पद्ममुनिजी म.सा.	4	रमेशजी चतुर्मूथा का निवास, वल्लभ नगर, धुलिया (महा.)	रमेशजी सकलेचा 9822197130	2	शासन दीपक श्री छत्रांकमुनिजी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, इतवारी नागपुर (महा.)	राजेन्द्रजी बैद 9960695111
3	शासन दीपक श्री जयप्रभमुनिजी म.सा.	2	जिला परिषद् स्कूल, कोलुरा, यवतमाल (महा.)	जितेन्द्रजी लुंकड़ 9423433891	4	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म.सा.	3	जैन भवन, चांदुर बाजार, अमरावती (महा.)	चन्द्रशेखरजी तातेड़ 9890130062

5	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभाश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री संयतिश्रीजी म.सा.	3	तेरापंथ भवन, मैट्रो मॉल के पास, नासिक (महा.)	किशोरजी ललवानी 9822456012	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.सा.	5	कोठारी जैन स्थानक भवन, पंचवटी, नासिक (महा.)	किशोरजी ललवानी 9822456012
7	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्तिश्रीजी म.सा.	4	चेतनजी मानेकर का निवास, मेटीखेड़ा, यवतमाल (महा.)	चेतनजी मानेकर 9075484648	8	शासन दीपिका साध्वी श्री सरिश्माश्रीजी म.सा.	3	शांतिलालजी चौपड़ा का निवास, महसावदा, नंदुरबार (महा.)	शांतिलालजी चौपड़ा 9422230816
9	शासन दीपिका साध्वी श्री रमणश्रीजी म.सा.	3	समता भवन, वखारकर नगर, धुलिया (महा.)	रमेशजी सकलेचा 9822197130	10	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंकाश्रीजी म.सा.	4	अभयजी वर्मा का निवास, वडनेर, वर्धा (महा.)	अभयजी वर्मा 8999113739
11	शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगारश्रीजी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, खामगाँव, बुलढाना (महा.)	नितिनजी झामड़ 8888515458					
10. बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड एवं आंशिक उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समियाश्रीजी म.सा.	4	समता भवन, विवेक विहार, हावड़ा (प.बं.)	मनोजजी डागा 9830960708 सुशीलजी गेलड़ा 9830452344	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीलीश्रीजी म.सा.	4	महावीर भवन, रामपुरहाट, बीरभूम (प.बं.)	सुशीलजी बांठिया 9732141964 अमितजी बोथरा 9732232254
12. दिल्ली-पंजाब-हरियाणा एवं उत्तरी अंचल									
1	शासन दीपक श्री संजयमुनिजी म.सा.	3	ए–875, तेरापंथ भवन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	रमेशजी गोलछा 9810074206 जतनजी भूरा 9811160100 उत्तमजी भूरा 9818145710	2	शासन दीपक श्री आदर्शमुनिजी म.सा.	2	महावीर भवन, रामामंडी, बठिंडा (पंजाब)	पूनमचंदजी सुराणा 9351092281
3	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांतश्रीजी म.सा.	4	एस.एस. जैन सभा भवन, फरीदकोट, फिरोजपुर (पंजाब)	ऋषभजी जैन 9915001000	4	शासन दीपिका साध्वी श्री समयाश्रीजी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, सुशांत सोसायटी, अंसल, मेरठ (उ.प्र.)	अनिलकुमार जी जैन 9837061468 प्रदीपजी जैन 9897081800

खिलते सुमन उभरती प्रतिभा

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. की असीम कृपा से दुर्ग निवासी स्वरूपचंदजी ज्ञानचंदजी पारख, गौतमचंदजी बोथरा की सुपौत्री एवं ज्योतिजी-अंकितजी पारख की सुपुत्री **कु. प्रचीता पारख** ने मात्र 5 वर्ष की अल्पायु में सामायिक, प्रतिक्रमण, दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन, रामेश चालीसा आदि कंठस्थ कर अद्भुत धार्मिक योग्यता का परिचय देकर परिवार, समाज एवं संघ को गौरवान्वित किया है। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित साहित्य

हिन्दी

- दो सूर्यों का सामना
- सूरज की शीतल छाँव
- सूरज के दर्पण में
- सूरत-ए-मजहब
- नूर-ए-सूरत
- ऐसी वाणी बोलिए
- आई टू आइ (Available on Amazon)
- सूर्य झरोखे बैठकर
- जो सूरज पच्छिम उगे
- सूर्य नमस्कार
- सुरीली सूरत
- जैन सिद्धांत बत्तीसी
- पूज्य हुक्मेश

English

- Eye to I (Available on Amazon)
- Celestial Sounds
- Nana (Published by Penguin)
- Jain Siddhant Battisi

आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. का साहित्य

जैन संस्कृति का राजमार्ग	20/-
नवीनता के अनुगामी	30/-
चिंतन-मनन-अनुशीलन भाग-2	20/-

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. का साहित्य

अनुकम्पा विचार भाग-1	150/-
चिंतन-मनन-अनुशीलन भाग-1	100/-
सद्धर्ममण्डनम्	240/-
ज्योतिर्धर	200/-
जवाहर किरणावली (1-34)	2635/-

आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का साहित्य — नानेशवाणी (भाग 1-52)

भाग सं.	पुस्तक का नाम	विधा	दर
1.	गुणस्थान स्वरूप और विश्लेषण (अप्राप्य)	गुणस्थान विवेचन	35
2.	आह्वान अपनी चेतना का	प्रवचन	100
3.	अनुभूति के क्षण	प्रवचन	80
4.	आत्म का साक्षात्कार	प्रवचन	80
5.	कषाय समीक्षण भाग-1	प्रवचन	80
6.	कषाय समीक्षण भाग-2	प्रवचन	80
7.	समीक्षण धारा	प्रवचन	80
8.	परदे के उस पार	प्रवचन	80
9.	समीक्षण करें मन का	प्रवचन	80
10.	समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान	प्रवचन	80
11.	संस्कार क्रांति भाग-1	प्रवचन	80
12.	संस्कार क्रांति भाग-2	प्रवचन	80
13.	समता दर्शन और व्यवहार	समता दर्शन	80
14.	समता निर्झर	प्रवचन	80
15.	ऐसे जीएं भाग-1	प्रवचन	80
16.	ऐसे जीएं भाग-2	प्रवचन	80
17.	ताप और तप	प्रवचन	80
18.	किं जीवनम्	प्रवचन	80
19.	ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा	प्रवचन	80
20.	बनो अभय तो पाओ जय	प्रवचन	80
21.	क्रांतिकारी कदम आगे बढ़ते रहें	प्रवचन	80
22.	शांति के सोपान	प्रवचन	80
23.	नव निधान	प्रवचन	80
24.	आध्यात्मिक ज्योति	प्रवचन	100
25.	चेतन अपने घर आओ	प्रवचन	100
26.	प्रवचन पीयूष	प्रवचन	80
27.	मन की माला	प्रवचन	80
28.	समता मति गति दृष्टि की	प्रवचन	80
29.	अपने का समझें	प्रवचन	80
30.	आपका भविष्य आपके हाथ	प्रवचन	100
31.	मनुष्यों को देवताओं का नमन	प्रवचन	100
32.	दु:ख और सुख	प्रवचन	100
33.	सच्चा सौन्दर्य	प्रवचन	80
34.	निर्वाण और ज्योति	प्रवचन	80
35.	सर्वत्याग की साधना	प्रवचन	80
36.	सर्व मंगल सर्वदा	प्रवचन	100
37.	उभरते प्रसंग समाधान के आयाम	प्रश्नोत्तर	100
38.	अध्यात्म के बिखरे मोती भाग-1	प्रवचन	80
39.	अध्यात्म के बिखरे मोती भाग-2	प्रवचन	80
40.	गहरी पर्त के हस्ताक्षर	चिंतन	80
41.	लक्ष्यवेध	कहानी	80
42.	नल दमयंती भाग-1	कहानी	80
43.	कुमकुम के पगलिए	कहानी	80
44.	अखण्ड सौभाग्य	कहानी	80
45.	अन्तर के प्रतिबिम्ब	कहानी	80
46.	नानेश दृष्टांत सुधा	कहानी	80
47.	निर्ग्रन्थ परम्परा में चैतन्य आराधना	प्रवचन	100

भाग सं.	पुस्तक का नाम	विधा	दर
48.	नल दमयंती भाग-2	कहानी	80
49.	अध्यात्म के बिखरे मोती भाग-3	प्रवचन	80
50.	आध्यात्म का कुआँ	प्रवचन	100
51.	परमान्नद	प्रवचन	100
52.	समाधान की राह	प्रवचन	100

समता कथा माला

भाग सं.	पुस्तक का नाम	दर
1.	वह पांव ये पांव	35
2.	धुल गये खून के हाथ	35
3.	विजय के ऊपर विजय	35
4.	बुद्धि कभी हारती नहीं	35
5.	कैसे फिसलता है मन ?	35
6.	वह खाण्डे की धार चली	35
7.	अंगुली से उपजा उजाला	35
8.	एक रात की बात	35
9.	झोंपड़ी की आग महल में	35
10.	कफन की कड़ी कसौटी	35
11.	देवता दोनों बार हारे	35
12.	अभिमान हाथी का	35

अन्य महत्वपूर्ण कृति

*	जिणधम्मो	250
*	कर्म प्रकृति भाग-1	60
*	कर्म प्रकृति भाग -2	200

बंगाली अनुवाद

	समता दर्शन आर व्यावहार	
*	(समता दर्शन और व्यवहार)	250

अंग्रेजी अनुवाद

*	Deep Imprints (गहरी पर्त के हस्ताक्षर)	250
*	Equanimity, Philosophy & Practice (समता दर्शन और व्यवहार)	175

गुजराती अनुवाद

	पुस्तक का नाम	दर
*	જિણધમ્મો ભાગ ૧ (जिणधम्मो भाग-1 गुजराती)	150
*	જિણધમ્મો ભાગ ૨ (जिणधम्मो भाग-2 गुजराती)	150
*	જૈન સંસ્કાર પાઠ્યક્રમ ભાગ ૧-૫ (जैन संस्कार पाठ्यक्रम (भाग 1-5))	25
*	સમતા દર્શન અને વ્યવહાર (समता दर्शन अने व्यवहार)	100
*	ઊડાણના હસ્તાક્ષર (उड़ाणना हस्ताक्षर)	100

आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का साहित्य

भाग सं.	पुस्तक का नाम	विधा	दर
1.	आणाए मामगं धम्मं	प्रवचन	45
2.	यतना की महिमा	प्रवचन	100
3.	चैतन्य की यात्रा	प्रवचन	100
4.	दो कदम सूर्योदय की ओर	प्रवचन	100
5.	मानवता की खोज	प्रवचन	100
6.	मन शुद्धि परम सिद्धि	प्रवचन	100
7.	आत्मकल्याण का मार्ग	प्रवचन	100
8.	धर्म सुना तो क्या हुआ	प्रवचन	100
9.	गंगा लौट हिमालय आये	प्रवचन	100
10.	करें तीर्थ की परिक्रमा	प्रवचन	100
11.	बिन कुँजी के खुले न ताला	प्रवचन	100
12.	ऐसे जगाएँ ज्ञान चेतना	प्रवचन	100
13.	ताला उलटा चाबी सीधी	प्रवचन	100
14.	सूर्ययान की सफलता	प्रवचन	100
15.	दहाड़ता सूर्य	प्रवचन	100
16.	दो सूर्यों का सामना	प्रवचन	100
17.	सूर्य झरोखे बैठकर	प्रवचन	100
18.	सूरज की शीतल छाँव	प्रवचन	100
19.	जो सूरज पच्छिम उगे	प्रवचन	100
20.	सूरज के दर्पण में	प्रवचन	100
21.	सूर्य नमस्कार	प्रवचन	100
22.	सूरत-ए-मजहब	प्रवचन	100
23.	सुरीली सूरत	प्रवचन	100
24.	नूर-ए-सूरत	प्रवचन	100
25.	ददतां वरः	प्रवचन	200
26.	झीलों पर सूर्योदय	प्रवचन	200
27.	झीलों में मंथन	प्रवचन	200
28.	झीलों की पारदर्शिता	प्रवचन	200
29.	झीलों का राजहंस	प्रवचन	125
30.	महकती झीलें	प्रवचन	125
31.	झीलों की लोरी	प्रवचन	125

आगम एवं तत्त्व सम्बन्धित प्रमुख पुस्तकें

*	श्री दशवैकालिक सूत्र (संशुद्ध मूल पाठ, स्वाध्याय संस्करण)	25
*	श्रीदशवैकालिकसूत्रम् (अध्याय 1-4)	45
*	स्वाध्याय माला	100
*	जम्बूद्वीप (क्षेत्र लोक मंजूषा भाग-1) (शोधपूर्ण, प्रामाणिक, सचित्र, विस्तृत विवेचन)	530
*	जिणधम्मो (हिन्दी)	250
*	जिणधम्मो (भाग-1 गुजराती)	150
*	जिणधम्मो (भाग-2 गुजराती)	150
*	अन्तगडदसाओ	50
*	आगम स्तोक मंजूसा भाग-1 (प्रज्ञापना सूत्र के पद 1 से 10 तक)	30
*	आगम स्तोक मंजूसा भाग-2 (प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े पद 11 से 20 तक)	20
*	आगम स्तोक मंजूसा भाग-3 (प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े पद 21 से 36 तक)	10

❊	आगम स्तोक मंजूषा भाग-4 (भगवती सूत्र के थोकड़े पद 1 से 69 तक)	20
❊	आगम स्तोक मंजूषा भाग-5 (श्री भगवती सूत्र शतक 8 से 12 के थोकड़े)	20
❊	आगम स्तोक मंजूषा भाग-6 (श्री भगवती सूत्र शतक 13 से 23 के थोकड़े)	55
❊	आगम स्तोक मंजूषा भाग-7 (श्री भगवती सूत्र शतक 24-गमक का थोकड़ा)	15
❊	आगम स्तोक मंजूषा भाग-8 (श्री भगवती सूत्र शतक 25 से 41 के थोकड़े)	55
❊	श्रीमद् भगवती सूत्र प्रश्नमाला-1	350
❊	श्रीमद् भगवती सूत्र प्रश्नमाला-2	350
❊	श्रीमद् भगवती सूत्र प्रश्नमाला-3	550
❊	बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता का थोकड़ा (कर्म स्तोक मंजूषा भाग-1)	10
❊	क्षयोपशम का थोकड़ा (कर्म स्तोक मंजूषा भाग-2)	10
❊	कर्म स्वरूप (कर्म स्तोक मंजूषा)	10
❊	तत्व का ताला ज्ञान की कुँजी भाग-1	30
❊	तत्व का ताला ज्ञान की कुँजी भाग-2 (जीव के 563 भेद)	20
❊	जैन स्तोक मंजूषा भाग 1-2	15
❊	जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1-5 (गुजराती)	30
❊	प्रतिक्रमण सूत्र	45
❊	Pratikarman Sutra (English)	35
❊	सामायिक सूत्र	15
❊	Samayik Sutra (English)	5
❊	पच्चीस बोल सड़सठ बोल का थोकड़ा	30
❊	Pachees Bol Ka Thokda (English)	15
❊	लघुदण्डक	5
❊	पाँच समिति तीन गुप्ति का थोकड़ा	5
❊	श्रावक के 12 व्रत	25
❊	श्रावक के 14 नियम	25
❊	कर्म बंध और हमारा जीवन	75
❊	कर्म प्रकृति भाग-1 (कम्मपयडी)	60
❊	कर्म प्रकृति भाग-2 (कम्मपयडी)	200
❊	कल्प मर्यादा	15
❊	कषाय मुक्ति	--
❊	जैन संस्कार पाठ्यक्रम (भाग 1-12)	--
❊	50 थोकड़े न्यू	30
❊	जैन सिद्धांत बत्तीसी 45 / जैन सिद्धांत बत्तीसी (छोटी)	30
❊	जैन सिद्धांत बत्तीसी (गुजराती)	45
❊	Jain Siddhant Battisi	20
❊	कर्म प्रज्ञप्ति (अध्याय 16-24)	25
❊	कर्म प्रज्ञप्ति (अध्याय 25-28)	90
❊	कर्म प्रज्ञप्ति (अध्याय 29-31)	65

अन्य साहित्य

❊	सम्मूर्च्छिम मनुष्य : आगमिक सत्य, विशुद्ध परम्परा	500
❊	साधुमार्ग की पावन सरिता	150
❊	नाना गुरु की कहानी	20
❊	धर्म के गीत	30
❊	निरतिशय नानेश (चित्र कथा)	30
❊	अद्भुत योगी (आ.श्रीलालजी म.सा. का जीवन चरित्र)	150
❊	समता सुमन	60
❊	चौबीसी स्तवन	70
❊	साधुमार्गी जैन संघ की अनमोल मणियाँ	100
❊	तुम सूर्य हो मैं कमलिनी	400
❊	नानेश-रामेश चालीसा	5
❊	समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि	25
❊	जैन आगम दृष्टांत सुधा	60
❊	जिनवाणी कहती है	40
❊	गणेश गुण शतक	10
❊	श्रावस्ती का राजहंस	30
❊	भोग से योग की यात्रा	50
❊	जवाहर क्रान्ति	100
❊	वीर कहे गौतम से	30
❊	आचार्य श्रीलाल जी म.सा.	30
❊	भावय रे (16 भावना)	100
❊	आगम पुरुष	70
❊	बच्चों के नाना गुरु	70
❊	अपश्चिम तीर्थंकर भगवान महावीर भाग-1	60
❊	अपश्चिम तीर्थंकर भगवान महावीर भाग-2	60
❊	अपश्चिम तीर्थंकर भगवान महावीर भाग-3	100
❊	अपश्चिम तीर्थंकर भगवान महावीर भाग-4	70
❊	अपश्चिम तीर्थंकर भगवान महावीर भाग-5	150
❊	आचार्य श्री उदयसागर जी	15
❊	श्रीमज्जावाहराचार्य के जीवन संस्मरण	20
❊	उपाचार्य जीवन संस्मरण	25
❊	समता दर्शन : एक दिग्दर्शन	15
❊	Shrimad Jawaharacharya : Life & Personality	50
❊	Know & Grow (Level 1, 2)	10
❊	जैन दर्शन और व्यवहार	नि: शुल्क
❊	समता तत्त्व बोध	15
❊	नानेश चरित काव्यम्	30
❊	ऐसी वाणी बोलिए	100
❊	पूज्य हुक्मेश	30
❊	समता तत्व बोध	15
❊	Nana (Published by Penguin)	-
❊	आध्यात्मिक आरोग्यम्	125
❊	अनन्य	600
❊	Equanimity : Philosophy and Practice	175

चिन्तन

❊	नीरव का रव	100
❊	अनाहत नाद	100
❊	भ्रामरी	100
❊	ब्रह्माक्षर	100
❊	आरोह	100
❊	प्रणव	100
❊	उपांशु	100

साधुमार्गी पब्लिकेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334001 (राज.)

Email : publications@sadhumargi.com Website : www.sadhumargi.com

दूरभाष : 0151-2270261 8209090748, 7231855008

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

नीमच का कण-कण खिला ।
गुरु राम का चातुर्मास मिला ।।

साधना महोत्सव 2023

आचार्य श्री रामेश पावन वर्षावास प्रसंग

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्य ज्ञाता,
व्यसन मुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलालजी म.सा.

बहुश्रुत वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर
श्री राजेशमुनिजी म.सा

आदि ठाणा का पावन वर्षावास – 2023 प्रसंग रखे जाने वाले
समस्त आगारों सहित नीमच श्री संघ को प्राप्त हुआ है ।

सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं व श्रीसंघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर श्रीसंघ और परिवार सहित पधारकर धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

कार्यालय एवं प्रवचन स्थल-राठौर परिसर, नीमच (म.प्र.)

चौका व्यवस्था, कार्यालय प्रमुख	आवास-निवास व्यवस्था-6232518008	
शैलेन्द्र भण्डारी	मनोज खिंदावत	संजय कच्छारा
9179868371, 6232728008	9425106492	9827070063

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच

* समता युवा संघ * समता महिला मण्डल * समता बहू मण्डल

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261